सोगिनीरि समस्त संयुत कला, भारथ्थनो द्रिष्टयं।
साबाला बर बैर ग्रेह तिगुना, के के नगे राजयं॥

छं॰ ॥ १६ ॥ रू॰ ॥ १४ ॥

कवि का कहना कि स्त्री के कारण से बैर दोष आगे रामादि बड़े बड़ों को हो चुका है॥

कवित्त॥ गयौ चन्द तारिका। पुच लज्जा बिन आन्यौ॥
येच वीर्य सम्भवै। वीर्य लभ्भवै न पान्यौ॥
वैर दोष श्रीराम। बैर दोषह दुर्योधं॥
बैर दोष नघुराई। बैर दोषह मुचकन्धं॥
सां बैर दोष, पण्डव बलिय। मात बचन ग्रह दोष सहि॥
इक दिनह समय सुन्दरि सचिय। सभ्भ समय इह चरित लहि॥

छं॰ ॥ १७ ॥ रू॰ ॥ १५ ॥

कामधेनु का चरित्र॥

कबित्त॥ कामधेन पच्छै प्रचण्ड। व्रिषभयं चढ अधिकारिय॥
एक एक उत्तरै। एक चड्ढै रस भारिय॥
रसी सची दिषि निजर। दीन सराप सुधेनह॥
चैां पसु तुअ सुमनुच्छ। होइ पच्चाल ग्रेह मच॥
लभ्भी सुपच्छ जननी बचन। यंटि लई क्रम क्रम सुसर॥
तिह ग्रेह और जो सम्भवै। तौ बनहिं डैबर सघर॥

छं॰ ॥ १८ ॥ रू॰ १६ ॥

प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पढना॥

---

१४ पाठान्तर—हननोपि। दुजन। दुज्ज़न। घनं। परिहारं। पावार। वेर। जदोह। वहुवांन। गिरिनारि। भारथ॥

१५ पाठान्तर—श्रीरज। लभवै। श्रीरांम। दुर्जोधं। तघुराय। मचकन्धं। दिन। सुन्दर। इक॥

१६ पाठान्तर—क्रांमधेनु। पछै। प्रछैं। प्रछण्ड। वृषभ। अधिकारीय। उतरै। चढै। भारीय। साराय। हों। तूं। मनुष। भनुछ। लभी। सुपछ। बटि जोर। हीण्डे॥

दूहा ॥ भयो प्रात जगात दुतिय, बंचि सुकग्गद पानि।
आबू रा सलषान लिषि, बर गिर नारी बानि ॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १७ ॥

उस पत्र में बीर रूप देवस्थान हिँगुलाज के प्रभाव से पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहरराय के बल प्रताप का वर्णन था॥

कवित्त पूना कर पर बत्तह। कोरि दह नील सवायो ॥
बीर रूप इक रुद्र। थांन हिँगुलाज बनायो ॥
देवल एक अचम्भ। हेम पुत्तलि इक मंडी ॥
धूप दीप साषा* सुरङ्ग। धजा पत्ताकह ठड्डी ॥
दिष्षन सुथांन आचम्भ बर। ज्यों कवि मंची होइ कल ॥
कवि कहै चन्द बरदाइ बर। जो चहुआन सुहोइ बल ॥
छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ बर गिरनारि नरेस। सिंधु बट्टी सुरतानं ॥
तेज तुङ्ग तप तेज। बैर भंजै अरि पानं ॥
बर गुज्जर बैसाहि। जमत अड्डौ सुस्त बल ॥
तिन मुक्कलि दिय दूत। राज सम्भरिय षित्ति षल ॥
परिहार नाथ नाहर न्रपति। दुह बढ्यौ इक इक्क अग ॥
जानें कि जरा जुब्बन दुवन। सामन्तां संतोष भग ॥
छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ इत सामन्तन नाथ। बाथ बडवानल घल्लन ॥
सण्डल घल्लन नाथ। सार अग्गी षल जल्लन ॥
अकह कहानी करन। सरन रष्षैन असरन बल ॥
सुथिर अथिर करि थपन। अंग जग जन दारुन दल ॥

१७ पाठान्तर—पांनि। थांन। बांनि ॥
१८ पाठान्तर—परबत्तह। •प्रबतह। घांन। थांनि। हिंगुलाज। फूत्तरि। पुतलि। * अधिक पाठ है। सुरङ्ग। पताकह। द्विषिन। सु थांन। ज्यों। कहैं। जो। चहुंवांन। चहुआंन ॥
१९ पाठान्तर—वटी। पांनं। गुज्जर। अडो। मुकलि। षित्त। वल। जाने। जुबन। सांमन्तां ॥

भुत्र लोक सोक हर सुद्दिन तन। पन अप्पन सोमेस सुत्र ॥
छच धर्म कलिमल मलन। तिद्दिन छोर पिष्षिय सुदुत्र ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ चलत पंथि पिषि बाज। पिष्षि म्रगराज म्रगनि गन ॥
गोधन धरत गुवाल। हंकि लै चलत बननि बन ॥
महु तजि चलत मुहाल। अन्य तरु साष लगन कहुँ ॥
बद्दल विसद विसाल। चलत वसि पवन गगन महुँ ॥
तिम नाहर राइ नरिन्द पिषि। समर सहिन सक्कहि राकज ॥
गिरि लङ्क सङ्क सम बढ़ गरुत्र। गिरद पारि किज्जै अजक ॥
छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ २१ ॥

पट्टन में चौलुक्य भीमदेव, आबू पर जैत (सलख?) पंवार, मेवाड में समरसिंह, दिल्ली में अनङ्गपाल जैसे बलवानों में मण्डोवर में नाहरराय के राज्य करने का वर्णन।

कवित्त ॥ उत पट्टन भीमंग। भह्म चालुक्क लोह लुत्र ॥
अब्बू जैत पवार। लोह लरि जांनि अचल धुत्र ॥
समर सिंघ मेवार। दण्ड देवार अजर जर ॥
दीली पत्ति अनंग। लरन अड्डौ सुलोह लरि ॥
परिहार नाह नाहर न्रपति। इतन बीच अप बल रहै ॥
मण्डोवराइ मारू मरद। बर विरद बंकै बहै ॥
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्थाः में दिल्ली ननिहाल में आना, दिल्लीश अनंगपाल के अधीन राजाओं का वर्णन ॥

२० पाठान्तर–घलन। जलन। कहांनी। रवन। अगं। जगंन। जगं। कलिमल कलि मलन। पिषिय। सुअय।

२१ पाठान्तर–पंथ। बाज। पिषि। मृगनी। बनन बन। महुवाल। शाष। कहीं। कहु। महु। नाहरराय। सकहि ॥

२२ पाठान्तर–चालुक। अबू। जांनि। दिल्लीपति। चढे। बीचि। बिरद। बहैं ॥

कवित्त ॥ बरष अट्ठ प्रथिराज । गयौ मुसाल्ल दिल्ली थद्द ॥
राज करे अनँगेस । सेव मरुधरा करै सद्द ॥
मंडोवर नागौर । सिंधि जलवह्व सुपट्ठै ॥
पेसीरां काहोर । धरा कंगुर लगि कंठै ॥
कासी प्रयाग गढ देवगिर । इते सेव अग्या धरै ॥
सीमाडवियां संकै सुपसु । भ्रित अनंग सेवा करै ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २३ ॥

मंडोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेट को दिल्ली आना, पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और माला पहिरा कर कहना कि जब. पृथ्वीरांज सोलह वर्ष का होगा तब मैं अ[illegible]ी कन्या इसको विवाह दूंगा ॥

कवित्त ॥ आयौ नाहर राइ । सेव आदरिय दिलेसर ॥
दिष्षि कुँवर प्रथिराज । नूर अदभूत नरेसर ॥
अंबर माला इक्क । अंक पहिराइ कह्यौ इद्द ॥
मैं दिद्धी रूपमंगि । सबैं उच्छाह कियौ ग्रद्द ॥
आनंद तेज राजा अनँग । प्रथीराज आयौ घरद्द ॥
दुइ अट्ठ बरस जब बीति गय । व्याह्युँ कह्यो देव गिरद्द ॥
छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २४ ॥

नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या देना अस्वीकार करंना ॥

२३ पाठान्तर–प्रथीराज । मुर । संध । बट । पुठैं । पैसोरा । कंटै । इतै । पह । भ्रत ॥

२४ पाठान्तर–नाहरराय । अदरी । दिल्लेसर । देषि । कुंअर । प्रथीराज । अदभुत्त । एक । पहिराय । शीधी । सबैं । उछाह । कीयो । सह । आभंग । अनंग । प्रथिराज । अयो । अठ । बीतिगा । व्याहयुं । व्याहयु । देवगिर ॥

दूहा ॥ लालपनै प्रथिराज नें, दिय कंचन वैमाल ॥
मनौ फिरि किन्नौ अक्रम, नाहर राइ विसाल ॥

छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ २५ ॥

नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल आदि हमारे योग्य नहीं है ॥

कवित्त ॥ लिषि कग्गद परिमांन। थांन अजमेर पठाइय ॥
दूत पंथ अबिलंब। पास संभरि वै आइय ॥
चिंति मत्त आरंभ। सेन पारंभ विचारिय ॥
बाल बीर प्रथिराज। देइ नांही परिहारिय ॥
सग पन सुआदि सम वर न्रपति। समर जुद्ध साधै समर ॥
कुल ढुंढ नाम दिज्जै नहीं। इह कलंक लग्गै सुघर ॥

छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ षेतरपाल कीं पूजैं कौनं। जो परहरि गौ बिंदह मौनं।
परहरि सिव उमया गुन तत्तं। को मंडै चंडाली मंत्तं ॥

छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ २७ ॥

दूत का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना ॥

दूहा ॥ लिषि कग्गद परिहार पर, विवरि विवर करि दूत ॥
लै दीनौ प्रथिराज कर, समी संभ सपहूत ॥

छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ २८ ॥

पृथ्वीराज का क्रोध करना, सोमेश्वरदेव का समझाना ॥

कवित्त ॥ बढि अवाज* अजमेर। बंचि कग्गद चौरासिम ॥
परिहारह सब सेन। धमै परिहरि बढ्यौ स्रम ॥

---

२५ पाठान्तर-बालपनैं। पृथीराजनैं। फिर। कीनैा। नाहर राय ॥

२६ पाठान्तर-परिमांन। थांन। चित्तिं। मत। विचारीय। पृथीराज। देत। नांहीं। परिहारीय। नर्पति। जुध। साधें। नांम। दिजे। नाही। लगैं ॥

२७ पाठान्तर-षेत्रपालकूं। पूजे। गो। मौन ॥

२८ पाठान्तर-पृथीराज। पहूत ॥

सूर नूर तिन तेज। मध्य अँषियन यौं राजै ॥

प्रात ओस जिम बूंद। जबच अग्रच अनु साजै ॥

मंगल अनेक जंपत करत। तात वरज्यौ पुच फिरि ॥

मंजाह साच सिसु बत्त सुनि। करहि जुद्द भुम्मिय सु जुरि ॥

छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ २९ ॥

सरदारों का पत्र सुनकर क्रोध करना ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त सामंत। बँचे कग्गद परिहारौ ॥

सीस लग्गि असमान। षिज्यौ लंगा वंगारौ ॥

सिंघाने करि चन्यौ। केन जबूं कवर पद्धौ ॥

केन कीन सनि राच। जुद्द तारा ससि बध्यौ ॥

बर कन्ह बीर सोमेस पहु। चाहुवान बकारियै ॥

बाहंत बीर अरि नीर बिच। दल चौहाना तारियै ॥

छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ ३० ॥

कवित्त ॥ मुक्कै दूत सुद्रूत। रत्त गुन अरिन बिरत्ता ॥

चिंत तनौ सिर भार। सार कारज सो रत्ता ॥

बर अप्पन जानही। प्रमान न्रमान सुरष्षै ॥

द्रिग राजान प्रमान। देस विद्देस परष्षै ॥

ते दूत सपत मंडौवरह। चर चरिच अनुसरि परे ॥

भय प्रात राज दरबार गय। दिष्षि धार धर धर डरे ॥

छं ॥ ३३ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये सेना सजना ॥

२९ पाठान्तर-आवाज। धूम। मधि। अंषिन। राजे। उम। बुंद। अयन। मंजाह माह। भूमीय ॥ • यह शब्द अर्थात् "आवाजि और आवौज" आदिपर्व्व के रूपक १८१ तथा १८२ पृष्ठ ७६ में भी आया है। उस पर की टिप्पणी देखो। संस्कृत 'वाज" और "वाद" शब्द Sound, sounding, discourse, speech. and prayer आदि के अर्थों में प्रयोग होते हैं उन से यह हिन्दी अपभ्रष्ट शब्द बने दीखते हैं ॥

३० पाठान्तर-सुनीय। सामंत्। बंचे। बचे। कगद। असमांन। लग्गा। कर। पधौ। कीनं। बधौ। कन्ह। चाहुआंन। चहुवांन। बकारीयै। बाहद। विचि। चौहांनां। तारीयै ॥

३१-पाठान्तर-मूकै। कारिज। जांन हि। प्रमांन। त्रिम्मांन। प्रमांन। राजन। विदेस। परषे। संपंत्त। धर चरिच। दिषि ॥

दूहा ॥ तार बरज्यौ बत्त बहु, एक न आवै दाइ ॥
उत प्रथिराज नरिंद ने, सज्ज्यौ सेन सुभाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

सेना का वर्णन ॥

लघुनाराच ॥ हय गयं रुजे भरं । निसांन बज्जि दूभरं ॥
नफेरि बीर बज्जई । मृदंग झल्लरी गई ॥ छं० ॥ ३५ ॥
सुनंत ईस रज्जई । तनीस राग रुज्जई ॥
सुभेरि भुंकयं घनं । श्रवन्न फुट्टि झंझनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नरद नाद रिझ्झयं । चुसठ्ठ ताल छिज्जयं* ॥
तुरंग पंति चल्लयं । मनौं जलद हल्लयं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
तरप्पि तेज तामसी । मनों कि नद्द वामसी ॥
झलक्कि मंत दंतयं । मनौं कि बीज पंतयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥
जेर जराय बंगरी । मनौं चमक्क विज्जुरी* ॥
सिरीसु सोभ जग्गयं । कि भान मेघ उग्गयं ॥ छं० ॥ ३९ ॥
श्रवंत सोभ दानयं । झरंत मेघ जानयं ॥
उपंम और दुत्तियं । खिलाब राद्द पुत्तयं ॥ छं० ॥ ४० ॥
उपंम तीय उद्धरं । कि मिच कज्जलं गिरं ॥
जु बैरखं विराजही । वसंत द्रुष्प लाजही ॥ छं० ॥ ४१ ॥
ढुरंत चैार सीसयं । गिरं कि गंग दीसयं ॥
दुती उपंम लग्गयं । कि बद्दलं कि बग्गयं ॥ छं० ॥ ४२ ॥
जु घूघरं घमक्कयं । कि दादुर सु भद्दयं ॥
दुती उपंम मेलयं । सुहाग वाम केलयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

३२ पाठान्तर—दाय । पृथीराजनैं । सुभाय ॥

३३ पाठान्तर—छंद लघुनाराज़ वा नराजा । हयगयं । निसांन । दुभरं । बजई ॥ ३५ ॥ रजई । सजई । बजई । नफेरि । श्रवन ॥ ३६ ॥ नारद नरद रिझयं । चोसट्ट । * यह दूसरा पाद सं १६४७ की पुस्तक में नहीं है । चलयं । मनों । जलद । हलयं ॥ ३७ ॥ तरपि । तांमसी । मनों । वांमसी । झलकि । मनों । बगयंतयं ॥ ३८ ॥ * ये दोनों पाद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ।ससोभ । जगयं । भांन । उगियं ॥ ३९ ॥ दानयं । जानयं । दुतीयं षिलावे । पुत्तियं ॥ ४० ॥ उंपंम । कजलं । ह ॥ ४१ ॥ चोंर ॥ ४२ ॥ घुघरं । घमघमं । दुदुरं । भदयं । उपम ॥ ४३ ॥

सुघंट घोर घोरयं। सुनंत श्रोन फोरयं॥
तिलक्कं चंद साजही। मनौं गनेस राजही॥ * छं० ॥ ४४॥
दुती उपंम जग्गयं। दुवंकि लग्गि पब्बयं॥
गरूव गुर्ज सहयं। मनौं कि मास भद्दयं॥ छं०॥ ४५॥
सु पीलवांन चंदयं। अरापती कि इंदयं॥
सुअस्सवार राजही। कि जंम जोर साजही॥ छं०॥ ४६॥
मिलंत मुंक नैनयं। तिलग्गि सीस गैनयं॥
ते रूप भूप मारसे। कि अश्वनी कुमार से॥ छं०॥ ४७॥
त्रिगुन तेज तंतनं। तिनंक कंक मंमनं॥
सनाह रूप अंगमं। मनौं कि जोग जंगमं॥ छं०॥ ४८॥
सनाह जोति दिष्ययं। मरीच भान भिष्ययं॥
सुभद्द छंद बद्दयं। कि वीर बान सद्दयं॥ छं०॥ ४९॥
आगंम विप्र बोलयं। हुलास रूचि चोलयं॥
सु पाइ कंचनं घनं। बुलंत ते भ्रनं भ्रनं॥ छं०॥ ५०॥
जुरंत जाम मव्वयं। प्रभा प्रसाद बुब्बयं॥
तिमध्य राज पिष्ययं। सु अंग गंग तिष्ययं॥ छं०॥ ५१॥
सामंत मध्य सोभयं। कि इंद्र देव लोभयं॥
कि पथ्थ पंडवं दलं। धनुक्क बान सब्बलं॥ छं०॥ ५२॥
चढंत राज प्रातयं। ते दूत देषि जातयं॥
कहंत अब्ब घटायं। भई समुद्र पाटयं॥ छं०॥ ५३॥
उषाह मध्य ते चलं। संगुन्न बंदि जे भलं॥
*ससूर सूरयं कलं। दिनं सु अष्टमी चलं॥ छं०॥ ५४॥ रू०॥ २३॥

सुघट। त्तिलक। मनों। गनेंस। * यह चौथा पाद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है॥ ४४॥ गरुअ। मनों॥ ४५॥ पीलवांन। औदाप्पती। जु दासवार॥ ४६॥ मुक। नेंनयं। गेंनयं॥ ४७॥ त्रिगुन। तिनंन। मनों॥ ४८॥ दिषयं। मरीचि। भांन। भिषयं। बदयं। बांन॥ ४९॥ पाय। भ्रननं भ्रनं॥ ५०॥ पिष्षयं। तिषयं॥ ५१॥ पथ बांन संबलं॥ ५२॥ अब। भयो॥ ५३॥ उपाह। मधि। सगुन। जे। * अंत के ये दोनों पाद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं॥ ५४॥

पिता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का लड़ाई के लिये यात्रा करना ॥

कवित्त ॥ दिन अष्टमि रवि वार । राज सुभ मँडि प्रस्थानं ॥
अष्ट दिसा जोगनी । भई साहाय सुध्यानं ॥
अष्ट च्यारि भय भान । राजहै अर्घ बधाइय ॥
इन में भौम अनिष्ट । चंद चौथे ग्रह आइयं ॥
चले नरिंद धायि दूत तब । मन आनंद सु चंद हुअ ॥
प्रथिराज तात आग्या सगुन । चरन बंदि चलि बज्र भुअ ॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

चौपाई ॥ *तात मात आग्या परमानहि । ता समान नह ध्रंम प्रमानहि ॥
गुरु-द्रोही प्रति मोही जानं । सो निहचै नर नरकहि थानं ॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

नाहर राय के दूतों का पृथ्वीराज की चढ़ाई और सेना बल का समाचार नाहर राय को देना ॥

छंद पद्धरी ॥ नाहर नरिंदं जे दूत आइ । समाचार सबै कहि ते सुनाइ ॥
दिसि जीत सत्त चहुवान सूर । लषियै चरिच मन मझ्झ कहर ॥ छं० ॥ ५५ ॥
इक सहस स्वान सँग नाम धार । देसान देस बल पग अपार ॥
तिन मंझ्झ पंच सै पवन पात । पित मात असल लाहौर जात ॥ छं० ॥ ५६ ॥
पांभरी अंग जिन पसम होत । दिषि दीप जोति तिन नैंन होत ॥
रातब्ब मंस घ्रत दुग्ध पान । आजान बाह दिषियै बखान ॥ छं० ॥ ५७ ॥
रेसमी डोरि पट्टी नरंम । रचै सीत छांह दुष्षित गरंम ॥
तिन सथ्थ पंच सै और डोरि । ते रष्षिक विन को सकै छोरि ॥ छं० ॥ ५८ ॥

३४ पाठान्तर-शुभ । मंडि । भनि । मे । भोंम । अरिष्ट । चौथें । ग्रह । नरिंद । धसि । प्रथीराज । आग्या ॥

३५ पाठान्तर-आग्या । परमानीय । परमांनहि । समांन । ध्रम्म । प्रमांनाय । जानें । निश्चै । नरकन । थानं ॥ * सं० १६४० की पुस्तक में इसे अरिल्ल करके लिखा है ॥

३६ पाठान्तर-समाचार । सब । जित्त । सत । चहुआंनं । मनमें । स्वान ॥ ५५ ॥ संग । नांमधार । देसान । मझ्झ । से । असिल ॥ ५६ ॥ नयन । रातब । पांन । आजांनबाह । बलांन ॥ ५७ ॥ नरंमं । शीत । दुषित । सथ । डोर । ति । रषिक । बिना ॥ ५८ ॥

इक आइ पेस इक अस्व मोल । बलवांन अंग चष रहत षोल ॥
सिक्कार नाम जहतह तिकान । आरंभ जुद्ध सब लषि विनान ॥ छं०॥५९॥
इक सत्त ऊंट भरी जीन साल । तिन धरै अंग छिप्पै न काल ॥
भेदैन वज्ज बुर नीर धार । तिन धरैं अंग जे दल पगार ॥ छं० ॥ ६० ॥
सन्नाह महिम वरनी न जाइ । जिप्पनि कि देव दनुजनि उपाइ ।
जनु ब्रह्म होम कढि मंच जोर । कै इद्रं अग्नि अप्पे अकोर ॥छं०॥६१॥
कै बरुन अप्पि पाताल ईस । कै पवन प्रसन परसाद दीस ॥
वाचिष्ट कढ्ढि कै कुंड होम । दीनी कि प्रसन ह्वै मान भीम ॥ छं०॥६२॥
असि सिलह सथ्थ लीनी नरेस । जितनह समर सज सचुदेस ॥
छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप सुनकार नाहरराय का चैाकन्ना होना ॥

दूहा ॥ सुनी षवर जब दूत मुष । चमक्यौ नाहरराव ॥
ए अप्पन गनियै नहीं । वैरी बिस हर घाव ॥
छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या करना चाहिए पहिले चैाहानों से हम से और बात थी पर अब ते बिगड़ गई ॥

कवित्त ॥ सुभ्रित सकल लिय बोलि । पुच्छि परिहार तिनहि मत ॥
चाहुआन पाथान । कहत आषेट जुद्ध बत ॥
तनक भनक सी कान । दूत इत्तह सुनि आए ॥
अप्प अचेतन रहैा । धरैा धर भूमि सदाए ॥

पाठान्तर—पेसि । बलवांन । सिकार । नांम । जहां । कांन । बिनांन ॥ ५९ ॥ सत । उंट । धरै । छिपै । भेदैन । धरैं ॥ ६० ॥ सनाह । महम । जिपन । उपाय । ब्रह्म । इद्र । अपे ॥ ६१ ॥ कैं । प्रासाद । कढि । प्रसंन । भोम । भोंम ॥ ६२ ॥ सथ । जितनह । सचु ॥ ६३ ॥
३७ पाठान्तर—षवरि । चमक्यों । अंपने । गिनियै । नही ॥

सोमेस हमह कछु है नहीं । तिन सुचित्त माया लई ॥
तब तौ सनेह कछु और हो । अब तौ कछु औरै भई ॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिए ॥

दूहा ॥ कहत सुभट परिहार के । हथ्थ चढी क्यों देइ ॥
सस्त्र मारि दल भंजि कैं । धग्ग धार धर लेइ ॥
छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

नाहर राय का कहना कि आगे से बढ़कर एक बारगी उन पर चढ़ाई करना चाहिए नहीं तो जीत न होगी ॥

कवित्त ॥ सुनि मंडोवर राइ । कहन बलवंत सुभट सह ॥
द्रव्य उनह कर चढ्यौ । कहहि सुतौ * सति बत यह ॥
जाइ अचानक परौ । बहुरि छेह्यौ नहिं जैहै ॥
प्रथीराज उस सबल । मारि धरती सब लैहै ॥
इक सुनत सबन बैठी सुमन । सजन सेन बेगो कह्यौ ॥
चर चरन चरचि कैं बत्त इह । सो भत्ती मारग गह्यौ ॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४० ॥

नाहर राय का सेना सजना ॥

दूहा ॥ सजी सेन मंडोवरह । नाहरराइ नरिंद ॥
संभरि संभरि राव न्रप । उर उदोत आनंद ॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

---

३८ पाठान्तर-पुछि । चाहुआंन । पायांन । कांन । रतह । अचेतनह । सुदाए । हमह कम । नही । सुहित ॥

३९ पाठान्तर-हथ । के ॥

४० पाठान्तर-मंडोवरराई । मडोवरराय । सुनव । कहं हि सुतो सति वत्त इह । * अधिक पाठ है । परीं । नहिं । जैहैं । डंस । धरत्ती लैहें । सबल । वेगो । वत । भती ॥

४१ पाठान्तर-नाहरराय । संभरि वार । उद्योत । आनंद ॥

पृथ्वीराज की सेना की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ सहस सेन संभारी । नरेस* मध्य मन टारि पंच सम ॥
बीर सिंगार सुभंत । कंत जनु रत्त बाम सम ॥
सत्तउभय नंत्रास । सिलह सज्जी चहुआनं ॥
चंद देषि मन मगन । कविन तिन करै बषानं ॥
पंचमी सोम रितु राज गत । सूर तेज जाजुल्लित हुअ ॥
करतार हथ्थ कित्ती कही । बजि निसान चहुआन धुअ ॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का आगे से बढ़कर लड़ने के लिये जोबनराय को आज्ञा देना ॥

तबैं सुजोबन राई । सूर साह्यौ चहुवानं ॥
तुम गुज्जर वैषंड । गाम मुरधर अगिवानं ॥
पंथ पंथ परवान । धाइ अगिवानी किज्जै ॥
सगा सपन जंपियै । हमनि आरोहि सुलिज्जै ॥
वामान पंथ अंधी प्रकृति । विन दिट्ठें दिट्ठें न कछु ॥
बन पंन अड्डु परबत रहै । भेद विना जानहि न कछु ॥
छं० ॥ ७० ॥ रू० ॥ ४३ ॥

जोबनराय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पथ बांधा सो वह रणभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ॥

तब्ब सुजोबन राइ । बत्त जंपै चहुवानं ॥
अड्डु पंन परबत्त । सत्त गुज्जर घर मानं ॥
लोहानौ आजान । पंथ बंध्यौ पालुक्की ॥
नाहर राइ नरिंद । गयौ तिरछी भुअ मुक्की ॥

४२ पाठान्तर-संभारि । * अधिक पाठ है । मधि । सिंगार । सजी । चहुआनं । पेषि । बषांनं । रिति । हथ । किती । निसांन । चहुआंन ॥

४३ पाठान्तर-तबै । राय राव । चहुवांनं । चहुआंनं । गुजर । गांम । मुरधुर । अगिवांनं । परवांन । अगिवांनी । कीजे । लिज्जे । वामांन । दिठें । दिठें । अडु । अद्रु । प्रबत । जानै ॥

करिवर अनेक कैंवर ग्रहिय। ए अग्गैं कै धाइया ॥
तिह ठाम चुक चिंत्यौ हुतौ। पैं नाहर राइ न पाइया ॥
छं० ॥ ७१ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

सबेरे नाहरराय के भग जाने पर सांझ को पृथ्वीराज का पहुँचाना और उसकी खोज करना ॥

गयौ प्रात परिहार। संझ चहुआन सपत्तौ ॥
बरज्यौ जीवन राइ। षोज कम कम करिलिन्नौ ॥
पंथवान पुच्छयौ। नदी उत्तरि तिन अष्षिय ॥
तातें पूर नरिंद। बाज तत्तौ करि नष्षिय ॥
आनंद सिलह सज्जिय नृपति। पंषी पारिव मोह जिम ॥
ज्यौं गिद्ध थंम पच्छो करै। चित्त दिगंबर कियौ तिम ॥
छं० ॥ ७२ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

चालुक के प्रधान (दीवान) के घर नाहरराय का पता मिलना और सामन्त सहित पृथ्वीराज का नदी उतरना ॥

कुंडलिया ॥ नदी उतरि सामंत सह। डीस संपते जाई ॥
चालुक्कां परधान ग्रह। पट्टन नाहर राई ॥
पट्टन नाहर राइ। सेन सज्जे सथ पंच्यौ ॥
चय हजार असवार। वीर संधान जुसंच्यौ ॥
प्रात कूच उप्परै। आज मुक्काम जुदुस्तर ॥
झुकि प्रथिराज नरिंद। सिलह सज्जी नदि उत्तरि ॥
छं० ॥ ७३ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

---

४४ पाठान्तर–तवैं। तवै। यौवनराय। चहुआंनं। चहुवांनं। अट्ठु। अडु। परबत। गुजर। मांनं। लोहांनो। अजांन। पालुकी। नाहरराय। भुइ। गहिय। के अग्गों उधाइया। तिहि। ठांम। यें। नाहरराव ॥

४५ पाठान्तर–चहुआंन। संपनौ। यौवनराव। लीनो। पंथवांन। पुछयौ। नदि। उतरि। अषीय। अष्षीय। नंषिय। सजिय। पारेव। परेव। ज्यों। गद्ध। गंद। पछो। चित। डिगंवर। कीयौ ॥

४६ पाठान्तर–नदि। उतरी। उत्तरि। सामंत सब। संपत्ते। जाय। चालुकां। परधांन। राय। सेन जेन। सजे ऊपरै। मुक्कांम। सुदुस्तर। प्रथीराज। सजो। उतरि ॥

सुभट सहित सेना में पृथ्वीराज कैसा शोभता है ॥

कवित्त ॥ सुभट सिलह घट जोति। भयौ घट सिलह सुभट्टन ॥
के *दीप मध्य भूडोल। कै * भान बद्दली सुभट्टन ॥
कै * मुकुर मध्य प्रतिबिंब। कै * संभु विभूत अधारै ॥
कै आरसि में सार। हथ्थ करतार सुधारै ॥
पाहार भार ठिल्लै क्रमनि। कै * उदधि मद्धि लंका दहै ॥
चिय वसिन द्रव्य अरु मोह बसि। तजि जुगिंद वानै ग्रहै ॥
छं० ॥ ७४ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के ग्राम पहुंचने का समाचार नाहरराय का सुनना और सेना इकट्ठी करना ॥

दूहा ॥ भई षवरि परिहार कौं, चढि आयौ प्रथिराज ॥
लग्यौ सेन एकत करन, दंद बजाने बाज ॥ छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

घाटी पर पर्वतराय को रास्ता रोकने के लिये भेजना ॥

दूहा ॥ जहँ पव्वय घाटौ हुतौ, मीना मेर मवास।
प्रब्बत सौं प्रब्बत मँड्यौ, अनमीजौ वन वास ॥ छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ हुकुम कीन परिहार तिन, प्रब्बत मीना मेर।
इततें तू रुकि एक टक, जितनैं आवत बेर ॥ छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ५० ॥

पर्वतराय का घाटी रोकना ॥

दूहा ॥ सुनि प्रब्बत धायौ तुरत, घाटौ रोक्यौ जाइ।
च्यारि सहस मीना प्रबल, वैठे आइ बलाइ ॥ छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

---

४७ पाठान्तर–ज्योति।* अधिक पाठ हैं। मधि। भांनै। बदली। सुभटन। मुकर। सिंभु। विभूत। आरसि सार में। हथ। सुधारैं। मधि। दहैं। वसि। वांनै ॥

४८ पाठान्तर–भई। कों। प्रथीराज ॥

४९ पाठान्तर–जहां। जह। घांटौ। हुतो। तहां मोनां। मीनां। परबत। सों परवत। प्रबत। त्यों। प्रबत। मंडयौ। जो ॥

५० पाठान्तर–परबत। इतने। इतनैं। तु। जितनै ॥

५१ पाठान्तर–पब्बेत। घांटों। रोकिय। बैठे। आंनि ॥

दूहा ॥ तीन पनच धुनहीं करन, बडे कटन तंडीर ॥
सगुन बिना पग ना धरै, बिकट बंन हंडीर ॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ५२ ॥

पर्वतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है ॥

कवित्त ॥ मंडोवर धर लाज । राज रष्षन परिहारन ॥
स्वामित सक बज्जंग । जंग जिन अंग न हारन ॥
देत मेवासनि भेलि । मारि धर पर पसु लावै ॥
देषत कै राजान । बिरदवा नैन चलावै ॥
बैठे सु ओट रूंषन उपल । करि तरकस उंधे धरनि ॥
देषंत वह चहुवान की । भरै जानि विसहर बरनि ॥
छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ५३ ॥

घाटी रुकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ॥

दूहा ॥ लहीं षबर प्रथिराज तिन । मीनां मरद अमान ॥
पकरि लोह पब्वय गह्यौ । लहै को अग्गौ जान ॥
छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्वतराय से लड़ने को कन्ह चौहान को भेजना ॥

कबित्त ॥ सुनि कुप्पिय प्रथिराज । जानि पुच्छिय सुअप्प मलि ॥
मनु मृगराज मृगीन । जोर क्रुद्दिय दिष्पिय बलि ॥
ग्राह ग्रहन जनु जीव । देषि तुट्टिय सुमीन कह ॥
समर समुद जल पियन । जांनि घट जन्म क्रोध मह ॥
षिजि कही कन्ह चहुआंन सहु । रंक आइ अड्डे फिरे ॥
सिर नाइ धाइ नरनाह तब । प्रब्बत सम प्रब्बत भिरे ॥
छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

---

५२ पाठान्तर-धुनहीं । वड्ढे । कढन ॥

५३ पाठान्तर-बजरंग । जंग किन अगन हारन । दैत । मेवासन । मेआसन । के । राजांन । विरदवां नेन । रूंष ऊटन । औंधे । चहुवांन । भरे । जांनि ॥

५४ पाठान्तर-षवरि । प्रथीराज । मीनां । अमांन । गह्यौ । अग्गैं । अग्गै । जांन ॥

५५ पाठान्तर-प्रथीराज । जांनि । पुंछिय । मनों । क्रुधिय कि दिषि बल । जांनि । चहुआंन । आंनि । परबत । भिरे ॥

कन्ह का पर्वत से युद्ध और उसमें पर्वतराय का मारा जाना ॥

छंद भुजंगी ॥ मँडे मेर मीना ग्रह्यौ घेरि घाटौ। मिले आइ कन्हं मनौं लौन आटौ ॥
मँडे ब्रूल वृष्पं कहूं दंत ओटं। ठिले ना सुमेरं मँडे जानि कोटं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

भई तीर मारं सरोसं सवेगं। तकै ताहि षारै सविद्धं अछेगं ॥
महावज्रघातं उतप्पात मंड्यौ। करे हूल हाकं बरं बेग हंड्यौ ॥ छं० ॥ ८४ ॥
जुटे जुद्ध अनवद्ध करिक्रुद्ध ठाढे। करैं हथ्थ वाहं पयं मंडि गाढे ॥
गिरै वान लग्गै बियं इत्त उत्तं। महामंच विद्या गुरु द्रोन चित्तं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
भई बान छाया न सूझै मरीचं। मिले लोह लक्काह तत्ते तरीचं ॥
गिरै अश्व असवार लोहं जहीरं। परै जानि डंडूर वृष्षं गंहीरं ॥छं०॥८६॥
हयं छंडि नर्नाह हूए उतारै। हहंकार बज्जै सहौंमं पुतारै ॥
परैं अश्व घातं सरोसं सरीरं। बकैं केय बक्कं करैं के अरीरं ॥छं०॥८७॥
सरं जाल भालं उडै लोह अग्गी। जरैं पंष पंषी गिरैं स्वर्ग मग्गी ॥
भरैं मुट्ठि कन्हं सरं मार बग्गं। निकस्सैं सुबिद्धे हुचैं पग्ग उग्गं ॥छं०॥८८॥
लगैं गुज्ज सीसं कहैं उक्ति कोगी। पछारंत तूंबा मनौं षीजि जोगी ॥
वहैं असि व्रिध्घात रोसं प्रहारं। मनौं निक्कसै सब्बनं तंततारं ॥छं०॥८९॥
लगैं संग कत्ती फुटै पुट्ठि पच्छी। किकंधं कहारं कटैं जार मच्छी ॥
जितं तित्त ऊठंत छिंछं रकत्तं। फिरैं भट्ट भीते भयानं बकत्तं ॥छं०॥९०॥
नचैं भूत वेताल षेतं भयानं। रसं वीर रस्से इसे निर्द्दयानं ॥
मिल्यौ भुप्प कन्हं परब्बत वीरं। हन्यौ असि घातं धुक्यौ ता सरीरं ॥९१॥
जस्यौ कंघ कन्हं असीघात धीरं। करी कट्टि संना परी चग्ग हीरं ॥
पस्यौ भुम्भिम्भ प्रब्वत्त रांवत्त मेरं। गज्यौ नाहरं गाज नाहर्सवेरं ॥
छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

५६ पाठान्तर–मंडे। मीनां। घांट्टा। मिलें। कंन्हं। मनों। लोन। लोंन। मंडे। वष्पं। उटं। ठिले। नां। मंडे ॥ ८३ ॥ सवेगं। हूक हाकं ॥ ८४ ॥ करै। हथ। गिरे। बांन। लगें। बीयं। इत। उतं। चितं ॥ ८५ ॥ बांन। लकबाह। गिरैं। परें। जांनि। वृषं ॥ ८६ ॥ नरनाह। हकंहाक। वजें। महं में। परें। सरोस। बकें। बंकं। बकं। करें ॥ ८७ ॥ जरे। गिरें। भरें।

पर्वत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं टूट पड़ना ॥

कवित्त ॥ परत धरनि परबत्त । आइ हुंक्किय नाहर रन ॥
बलबट्ठे सह मेर । जानि हनुमान लंक बन ॥
इक्क गिरत घन थाप । इक्क बध्धनि पक्कारिय ॥
बहर रूप सम भूप । रूप अनभूत सँचारिय ॥
मानिक्क बंस आयौ उतह । इत नाहर गल गज्जयौ ॥
परबत्त पर्यौ पहु षिष्षिकैं । सिंधू बज्जनं बज्जयौ ॥
छं० ॥ ९३ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का भी चढ़ चलना ॥

छंद पद्धरी ॥ चढ़ चल्यौ राज प्रथिराज ताम । साधन सुसेन वर वरन वाम ॥
दुल्लहे भयौ सोमेस पुत्त । वनिता विवाह मन कंक दुत्त ॥ ९४ ॥ *
बज्जहि निसान दस दिस गुरान । आषाढ अग्ग ज्यों मेघ थान ॥
रथ वाजि करी पयदल पुलेन । सज्यौ नरिंद चतुरंग सेन ॥ ९५ ॥ *
मुक्की सुभुम्मि अजमेर राज । यंत्तौ सुजाइ पट्टन समाज ॥
बज्जी सुलागि सिंधू निसान । भयभीत भेष भय दस दिसान ॥ ९६ ॥
बज्जिय सुभेरि भय भंकरीस । गज गजे गाह हय हट्ठ हींस ॥
गिरनार देस अरु सिंधु वट्ट । गज्जे सुगाजि सजि थट्ट थट्ट ॥ ९७ ॥
ढलकंत ढाल वैरष्य रंग । सोभंत विपन रिति राज संग ॥
मिल्लि आय पंथ नाहर नरिंद । वीराधि वीर बट्ठे सुदंद ॥ ९८ ॥
हक्कारि भट्ट सेना सवान । सामंत सूर करि लोह पांन ॥
कन्हा नरिंद आजान बाह । खंगरी राव स्वामित्त राह ॥ छं० ॥ ९९ ॥

भूठि । निकसैं । बुट्टी । हुश्रे । उगं । हंगं ॥ ८८ ॥ लगैं । गुजें । गुरंज । शीसं । कहे । पक्कारंत । तुंबां । मनें । वहैं अश्व निघात । वहे । त्रिघात । मनें । निकसें । निकसे । सर्वेनं ॥ ८९ ॥ लगें । संगि । छती । फुट्टें । पुठि । मछो । कहारं । कढें । मृछी । तित । उठंत । छिर्छे । रकतं । फिरें । फिरै । भट । वकतं ॥ ९० ॥ नचै । रसें । मुष । सुपरबत । असि ॥ ९१ ॥ कंन्ह । असि । कटि । संनाह । पष्षि । चष । झुझि । परवत्त । रावत्त । नाहर । सबें ॥ ९२ ॥

५७ पाठान्तर–परबत । आय । हक्किय । बट्टे । बढे । जांनि । हनुमांन । रकं । घेन घाय । इक । बथन । पक्कारीय । पक्कारिय । सम रूप । संचारिय । संबारीय । मानिकं । मानिक्क । गजयो । परबत्त । पिषि । कै । सिधू । बजन । बजयो ॥

संभारि बीर चालुक्क भूप। उपज्जौ ब्रह्म कुंडह अनूप॥
अततांइ तुरंग तेरह सुषंड। थिजि रह्यौ रोपि रन रोहि भुंड॥
॥ छं० ॥ १०० ॥

तिन ठाम आइ नाहर सुघेरि। वाहंत हथ्थ जनु करिय केरि॥
॥ छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

इधर पृथ्वीराज इधर नाहरराय का सन्मुख युद्ध॥

कवित्त॥ उत प्रथिराज नरिंद। इत सुपरिहार प्रबल रन॥
दुअन सैन असि कढ्ढि। करन कलपंत समय जनु॥
दुअन अङ्ग संनाह। दुअन नष चष्ष उघारैं॥
दुअन इष्ट आरंभ। दुअनि दुअ हथ्थ दुधारैं॥
दुअ सुभ्भि अङ्ग दुअ देव जनु*। दुअन धार दुअ तुक्क बहिय॥
संनाह कढ्ढि कट्टी सुतुक्क। नस उप्पम चन्दह कहिय॥
छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

कवित्त॥ दुअन हथ्थ दुअ भूप। रूप अदभूत रेष बहि॥
इन्द्र सिलह प्रथिराज। चंद्र परिहार तेज गहि॥
दुअ अभंग संनाह। दुअन देवन आधारन॥
दुअन तेज तन अंस। हंस दुअ हंस समाधन॥
अवतार भूत दुअ देव सम। दुअन चिन्ह उत्तम करिय॥
परब्रास षेत परब्रह्म दुति†। भृगु लंछन जनु धरि हरिय॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

५८ पाठान्तर-* ये ९४। ९५ और आधा ९६ छंद सं० १६४० की पुस्तक में नहीं हैं॥ प्रथीराज। तांम। वांम। दुल्लह। पुत॥ ९४॥ ज्यों। थांन। पुलेन। सज्यौं॥ ९५॥ मतौ। वज्री। लाव। लिसांन। द्रिसांव॥ ९६॥ बुजिग। गज्जैं सुराज हय हठ झोंप। गिरनारि। वट। गज्जें। घट घट॥ ९७॥ बैरष। बढ्ढे॥ ९८॥ हहकार। भटं सवांन। आजानबाह। स्वामित॥ ९९॥ चालूक। ऊपज्जौ। तुरंग। रोहि॥ रिन रोपि॥ १००॥ ठांम। हय॥ १०१॥

५९ पाठान्तर-प्रथीराज। कढ्ढी। सनाह। चष। हय। दुधारें। सुभि। काटि। कटी। "उपम॥

६० पाठान्तर-रूप। प्रथीराज। इहि। उत्तिम। द्युति। भृगु। लछिन॥

* एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में "दुअन इष्ट आरंभ" से "दुय देव जनु" तक नहीं हैं। परंतु सं० १६४० की में है॥

† एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में "दुअ देव सम" से "ब्रह्म दुति" तक नहीं है। परंतु सं० १६४० की में हैं॥

उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े को मार डालना ॥

दूहा ॥ फुनि प्रथिराज कुमार नें, हय हन्यौ परिहार ॥
कंध दुअं कटि वग सहित, धुक्यौ धरनि असिधार ॥
॥ छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

दूहा ॥ धुकत धरनि नाहर तुरिय, झपय्यौ बंध कनंक ॥
तेक तोकि तक्यौ तुरी, बहि असि कंध क्रनंक ॥
छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ दुअ कोटल दुअ न्रपति के, किन्नें हाजुर आनि ॥
दुअन बीच दुअ सुभट थट, अठु भऐं चह्वांनि ॥
छं ॥ १०६ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

रनबीर का सन्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना ॥

कवित्त ॥ बर पावस रनबीर। दुतिय पावस सम सज्ज्यौ ॥
धूम जोति अरु सलिलं। मरुत प्राकारन बज्ज्यौ ॥
सज्जि सेन अतुरंग। बरन बहल्ल रंग धारिय ॥
स्याम सेत अरु पीत। रत्त धज मत्त बिचारिय ॥
उन्नयौ धार धारह्वधनी। लरन तिरच्छौ बुठ्ठिबर ॥
बिज्जुलि झमंकि षग पंतिकर। षिवी सेन अरिजुथ्य पर ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

मोहन परिहार और पवार का सन्मुख हो लड़ना ॥

दूहा ॥ उत मोहन परिहार रन। मेर समान अमान ॥
द्वै द्वै असि कटि बिकट बनि। द्वै धनु द्वै द्वै बान ॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

---

६१ पाठान्तर-प्रथीराज। कुआरनैं। है। हंन्यो। कन्ह कट्टि हुअ ॥

६२ पाठान्तर-तुरी। तोकि ॥

६३ पाठान्तर-दुतीय। सज्यौ। मुरत। प्रक्कारन। सँजि। बद्दूर। धारीय। स्यांम। रत विचारीय। उनयैं। तिरछो। कुटि पर। बुट्ठि। बिजुलि। झमंक जुथ ॥

६५ पाठान्तर-दोहरा। समांन अमांन। द्वै द्वै धनु द्वैवांन ॥

कवित्त ॥ उत मोहन परिहार। इत सुपावस पंवार बर ॥
दिष्ट दिष्ट अंकुरिय। संझ जुग सीत दिष्ट धर ॥
मोहन कोपि करार। सीस पांवार सुझारिय ॥
टोप कट्टि फुटि मुंड। झपटि पांवार निझारिय ॥
फटि मुंड तुंड धर कट्टि झटि। लह विफार अफार झट ॥*
कर वत्त तत्त विहार कि तुरत। जनुकि कवारिय पटुपट ॥
छं० ॥ १०९ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

चामंड का युद्ध।

कवित्त ॥ चंड रूप चामंड। बलत बलवन्त प्रतापन ॥
हन्यौ संग दुअं अंग। निकसि दुअ अंगुल सापन ॥
उभै संग चलि आइ। मध्य गहि हथ्य दु हथ्थनं ॥
उडि भेजी सुप्रकास। कुहि पिचकार दहिकन ॥
परताप भगि परि प्रथ्थि पर। लोक तीन कीरति कहिय ॥
द्रव्यान पान निकसी सुरवि। जोति जाइ जोतिन मिलिय ॥
छं० ॥ ११० ॥ रू० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ मिले पौंन सौं पौंन। मिले पानी सौं पानी ॥
मिले तेज सौं तेज। मिले सूनै सूंनानी ॥
मिलै प्रथी सौं प्रथी। मिले हरि सौं हरि व्रेता ॥
मिले हुतासन होत। होम होमै जो होता ॥
जल होत जोत जल भिरत हरि। पय में जिम पय मिलि सुपय ॥
तिमि मरत दुरत जेइ झरत रनि। सुमिलिय प्रताप सु आप स्वय ॥
छं० ॥ ११? ॥ रू० ॥ ६८ ॥

६६ पाठान्तर–पांवार। झारीय। फटि। निझारीय। " • कटि मुंड तुंड हुअ षंड हुअ। अधर फट्टिय बर षग्ग झट।" सं० १६४७ की में यह पाठ है। वत। तत। विहार कि। कवारीय। पटु ॥

६७ पाठान्तर-आय। मद्य। हथ्य। दुहथ्थन। दधि। प्रताप। पर। पृथी। लोकं तन। द्रव्यांन। पांन। जाय ॥

६८ पाठान्तर–पोंन। सों। पोंन। पानी। सों। पानी। सुने। सुंनांनी। पृथी। सों। पृथी। व्रता। होमे। भिलत हर। तुरत। जेरं। रिंन ॥

कवित्त ॥ मंस हड्डु रद गूद। अंत बर बाज गज्ज नर ॥
अथ भूभ्रत्त असत्त। चढिय जुग्गिन तिन उप्पर ॥
इक्क दंत गज गिद्धि। उतरि लै अंत अलुझ्झिझय ॥
इक्क कोद जुगिनीय। करन अैंचत सौं भुक्किय ॥
तिहि दिष्षि चंद कविराज तत। अति उल्हास ओपंम बढि ॥
उडवत्त चंग सुचंग अंग। राज कुमारि अहानि चढ़ि ॥

छं० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ धवलंगो धवली दिसा। धवल त्तन चहुवान ॥
धवल दीह संमुह लग्यौ। जस धवलौ तन आनि ॥

छं० ॥ ११३ ॥ रू० ॥ ७० ॥

स्वामि रत्त रत्ते समुह। रत्ते नैंन कहर ॥
रन रत्ते द्व दाह सम। गुंजत गल्ह गहर ॥

छं० ॥ ११४ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

नाहर ? से नाहरराय का लड़ना ॥

कुंडलिया ॥ नाहर सौं संमुह लग्यौ। नाहर राइ नरिंद ॥
मंडोवर माह्ह बली। धनुवर भूपति दंद ॥
धनुवर भूपति दंद। सेन चहुआन ढँढोरी ॥
सुर असुरन करि मेर। मथत दरिया हिल्लोरी ॥
हय हथ्थिन घन हंकि। बीर कुथ्यौ क्कि काहर ॥
मरदन सौं मिलि मरद। मरद बुल्यौ मुष नाहर ॥

छं० ॥ ११५ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

---

६९ पाठान्तर—बाजि। गज। भृत। असत। जुगिना। उपर। इक। उतर। अलुझिय। इक। जोगिनीय। अैंचत। सों। भुकिय। तिहिं। दिषि। तित। उपंम। उडवत। चंग। कुंमारि। अट्टानि ॥

७० पाठान्तर—तन। तंन। चहुवांन। आंनि ॥

७१ पाठान्तर—स्वांमिरत। रते। रत्ते। नेंन। दते ॥

७२ पाठान्तर—सों। नाहरराय। धनिवर। चहुआंन। ढंढोरी। ढंढोरी। टंटोरी। असुरनु। दरीया। हिलोरी। हथिन। सों ॥

बलराय का खेत में मँडना ॥

कवित्त ॥ रथ रष्यौ थिर सुथिर। षेत मंड्यौ बलरायं ॥
सार मार अप्पार। धार लग्गा धर चायं ॥
उड्डिय अंग षगधार। धदी द्रुगा धर लोइय ॥
धक्क चक्कं उच्चार। सार अप्पं दल भोइय ॥
त्रिघात घात करकर करहि। नभ निसान तिन सद्द भरि ॥
सब सूर सुरंगीय कंक बल। सुभर कड्ढि असि वर पसरि ॥
छं० ॥ ११६ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

घोर युद्ध वर्णन ॥

छंद विराज ॥ कढी * तेग तत्तं। मनौं मच्छ घत्तं ॥
लगे लोह लग्गं। षगं षग्ग बग्गं ॥ छं० ॥ ११७ ॥
दुअं बाह बाहं। गजैं गज्ज ढाहं ॥
जुटे दन्त उत्तें। मनं मंस चित्तें ॥ छं० ॥ ११८ ॥
धुकैं धींग धक्कैं। चकैं सार छक्कैं ॥
भिरैं भूमि रुंडं। बकैं बैन मुंडं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
तुटैं तूट बाहैं। दतैं दंत माहैं ॥
छकं पाइ कूदैं। टिकैं तेक रुदे ॥ छं० ॥ १२० ॥
नचै चाहुआनं। तडित्तं कमानं ॥
रसं वीर रस्से। बचै लोह चस्से ॥ छं० ॥ १२१ ॥
गजैं गैंन देवी। अभूतं सुएवी ॥
नचै भूति भूमी। जकैं देषि भूंमी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
षिलै षेत पालं। बिहंडं कपालं ॥
रचै रुंड मालं। स्रवै स्रोन लालं ॥ छं० ॥ १२३ ॥
चवट्ठी चिकारै। फिकीयं फिकारै ॥

७३ पाठान्तर—थह। अपार। लगा। द्रुगा। धक हक। उचार। श्रयं। त्रिघात भह। निसांन। शब्द। सुरंगीय। कढि ॥

गमं गिद्ध गट्ठैं। पलं ष्रूचि चट्ठैं॥ छं०॥ १२४॥
भिरै भंति भारी। अभूतं सुरारी॥ छं०॥ १२५॥ रू०॥ ७४॥

दूहा॥ परत भिरत तुट्टत सुकर। करत निवर्त्त सुहथ्थ।
अप्पानौ बल हथ्थनह। का मंगै बल तथ्थ॥
छं०॥ १२६॥ रू०॥ ७५॥

नाहर कर नंन्हा सुपय। भय भारथ्थ उपाउ।
जासु जहां जो ऊबरै। तिहि बल रोह सदाउ॥
छं०॥ १२७॥ रू०॥ ७६॥

गाथा॥ कायर मुष्ष प्रमानं। बर कंमोदयं मोदयं मुष्षं।
सत लित पच प्रमानं। उघारियं वीर ह्रंदायं॥
छं०॥ १२८॥ रू०॥ ७७॥

छंद त्रिभंगी॥ हंकारे सूरं, बज्जत तूरं, नच्चत हूरं, सुर सुरयं।
हय छंडिय राजं, तेजय पाजं, लरे सुसाजं, भ्रुर भ्रुरयं॥
चलि चालं बंधी, तारा संधी, हँसै सुनंदी, दै तारी।
तुरसी रस मंजरि, तव नव पंजरि, तन घन पंजरि, बैमालं॥१२९॥
घन केसर रंगं, अंबनि अंगं, नच्चत जंगं, अहि कालं।
जंपे हरि गंगं, गुन अनभंगं, चरमन अंगं, असि भ्कारे॥
दूनौं बबकारैं, दुनों न हारैं, कोह करारै, गुन भारे।
केसरि रँग रोरं, असिवर भोरं, भौ तन कोरं, घटि कालं॥१३०॥
सिर तुट्टि प्रमानं उमया जानं, धूम्र समानं, मुर हालं॥

७४ पाठान्तर- वेग। तत्ते। मनों। दुहं। गजे। गज। हत उत्ते। मनों। चित्ते। धुक्कें। धगि। हक्कें। छक्के। वैंन। तुटें। लुटें। त्रूटि बाहें। दंतें। साहैं। पाय। रुट्टैं। चाहुवानं। रसे। बहैं। हसे। गैंन। भूमि भूंमी। जक्कें। रचैं। रुड। श्रवैं। घवटी। घवट्टी। फ्रक्कारी। फिक्कियं। फिकारैं। गोमं। गिद्धु। गट्टैं। चुट्टे। चिदैं। सारी। अभूंतं॥ • सं० १६४७ की लिखी पुस्तक में इस छंद का शुद्ध नाम विराज है और इतर में रसावला है। यह दो लगुगु और रसावला दो गुलगु का होता है।

७५ पाठान्तर-चुटत। हथ। अप्पंनौ हथ। मगौ। मगै। तथ॥

७६ पाठान्तर-भारथ। तिहिं॥

७७ पाठान्तर-मुष। प्रमांनं। कमोद। कंमोद। हयं। प्रमांनं। उधारियं।। ह्रंदाइं॥

छिल्लोरे षग्गं, अरि घट जग्गं, करिन अभग्गं, जुधमोरं।
परिहार सु आपं, अरि उर दापं, रुपि रन धापं, षग झोरं॥
चालुक्क सुमानं, जुद्ध समानं, अरि हरि मानं, गुम्मानं॥ छं०॥ १३१॥
पर मध्य मवारं, असि बहु भारं, अच्छरि तारं, सो रानं॥
कूरभ·षग जग्गी, दस क्रम भग्गी, फिर रन लग्गी, परिहारं॥
दाहिम षग षुल्लं, वीर सु वुल्लं, नह मन डुल्लं, भर सारं॥
कन्ह कुंमारं, रन परि भारं, सार सुमारं, नह हल्लं॥ छं०॥ १३२॥
आवध नह फुट्टै, गुरजनि कुट्टै, सीसय फुट्टै, कर चल्लं॥
रन जैत सरीसं, तुट्टिय सीसं, लगि घन रीसं, परि बथ्थं॥
रन लुथ्थि अलुथ्थं, गुन कवि कथ्थं, अचरिज सथ्थं, रवि रथ्थं॥

छं०॥ १३३॥ रू०॥ ७८॥

छंद भुजंगी॥ हकार्यौ जुसूरं विराजंत बीरं। स्वयं कंठ आभूषनं छंद नीरं॥
पया सेस मत्ता चवं पंच अच्छी। कितौ छंद नामं विराजै सु लच्छी॥ छं०॥ १३४॥
नवं नेह नारी लछी देह दूनौ। करी सूर नांही विराजंत सूनौ॥
हयं छंडि राजं लरे सूर तेजं। मनों जुद्ध आकूत भारथ्थ एजं॥ छं०॥ १३५॥
चलै चाल बंधे तनं मंड आसं। कहै चंद कब्बी तिनं जुद्ध भासं॥

छं०॥ १३६॥ रू०॥ ७९॥

गाथा॥ हंकारे बिप सेनं। बजे बज्जाइं पंच सद्दायं॥
सद्दे नव रंडा रंगं। भगं कन्ह चितयं षलयं॥ छं०॥ १३७॥ रू०॥ ८०॥

---

७८ पाठान्तर– हकारे। बजत्त। नंचत॥ १२९॥ केसरि। नवत। गंगं। सिरमन। बबकारै॥ १३०॥ लुटि। प्रमानं। हिलोरे। षगं। जगं। करि अनभगं। चालुक। गुमान। गुमौनं॥ १३१॥ अछरि। सोनानं। कूरंभ। कूरभं। क्रूरं। भगी। फिरि। लगी। षुलं। बुलं। डुलं। झालं भार सिरं। कुमारं। हलं॥ १३२॥ फुट्टै। विकुट्टै। फुट्टै। चलं। शीसं। बथ। लुथ उ लुथ। कथं। सथं। रथं॥ १३३॥
७९ पाठान्तर–सो सु। षटं। अछी। किनौ। नांमं। लछी॥ १३४॥ लरे। मनों। भारथ॥ १३५॥ कहै। कबी॥ १३६॥
८० पाठान्तर–हक्कारे। बीय बजाइ। सद्वाइं। सद्दे। रंगं रंगं। रंग रंग। भंगं॥

दूहा ॥ उत मंडोवर वीर कैं, इत संभरि वै राव ॥
दुअ लग्गा अस रार जुध, सुकवि चंद करि काव ॥
छं० ॥ १३८ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

छंद भुजंगी ॥ सलुथ्थं सलुथ्थं अलुथ्थं तिलुथ्थं। इयानं उवानं समानं पलथ्थं ॥
हयगं रथंगं धरं धार तुट्टै। धरं धार धीरं मसा वीर लुट्टै ॥
छं० ॥ १३९ ॥

पलक्कै रुधिंजा प्रवाहं सिरज्जं। धरं धाम धाहं रनं केन रज्जं।
भनक्कंत भेरी चिकारैं सुहथ्थी। नचैं रंग भैरुं ततथ्थे ततथ्थी ॥
छं० ॥ १४० ॥

प्रहारं सुदंती सुचंती अलुभ्भं। अलुभ्भैं सुदंती उडैं छिक्क भुभ्भं।
मनं भारते जान हेमं हयन्नं। परज्वाल तुट्टै तनंजा विनंनं ॥
छं० ॥ १४१ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

लोहाना आजानु बाहु के युद्ध का वर्णन ॥

कवित्त ॥ लोहानौ आजांन। बांह लंबी पसारै ॥
लंबी बांह पसारि। तेग लंबी उभ्भारै।
उभ्भारै विभ्भार। बीर बाहै बट्टाली ॥
अट्टाली अर बट्टि। कंध सोहैं सुट्टाली ॥
सुट्टाल कंध विव षंड हुअ। विधि ओपम कवि चंद कहि ॥
आरत्त घत्त आजान भुअ। मनु कजल कोटकि बिज लहि ॥
छं० ॥ १४२ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

८१ पाठान्तर—कें। दोउन के अंतराल युद्ध। सो चंद कीय सु काव ॥

८२ पाठान्तर—सलुथं सलुथं। सलुथं सलोथं। अलुथं तिलुथं। उयानं। प्रलथं। हयं गंगरथं। तुट्टै। लुट्टै ॥ १३६ ॥ पलकैं। रुधिजा। पबाहं। कंन। भनकंत। चिकारे। सुहथी। नचै। भैरैं। ततथे। ततथी ॥ १४० ॥ अलुभं। अरुभैं सुदंतो। अलुभंत। उडे। भुभं। हयनं। गयनं। परैं। तुटैं ॥ १४ ॥

८३ पाठान्तर—आजान। वाह। पसारे। उभारै। उभारै। विभार। बठाली। बठाली। अरिकट्टि। सोहैं। सुठाली। सुठालि। षंध छिछि षंड हुअ। उपम। आव्रत। घत आजानु। मनों ॥ मनौं ॥

कवित्त ॥ लोहांनै अरि फौज । चक्क चिहुंकोद फिराइय ॥
ज्यौं तूल मध्य बातूल । पवन जिम पत्त भमाइय ॥
मारुत बजि आरिष्ट । वाइ चिहुंकोद भुलावय ॥
कै वाय पुरातन धज्ज । चिविधि विध तुंग हलावय ॥
कै कुलाल चित चक्रित भौ । चक्क चिहूं दिसि फेरइय ॥
मृगराज मृगनि ज्यौं क्रोध बल । बल समूह अरि घेरइय ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥ तहां विभिक्ष पिथ कुंअर । लोह भारै गज मध्यं ॥
भइय भसुंड. विषंड । थंभ सोभंत सुतथ्यं ॥
कै * जलधि तट्ट हवि होम । धोम धारा घृत सिंचिय ॥
कै * तडित तेज नव घंन प्रमान * । भानं चलि वेहंल पंचिय ॥
कज्जल प्रमान प्रब्बत ढयौ । रत्त धार वुठ्ठंत जलु ॥
कंचन प्रनार द्वै सुर श्रवकि । इह ओपम दीसंत पलु ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ जावक स्रोन प्रनार जल । इंगुर फटिक बहात ॥
जीवन रद कढि रुधिर तिन । दंतू सर दरसात ॥
छं० ॥ १४५ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ लोहांनौ आजांन बाह * । जित्त आरनि जस लिन्नौ ॥
ज्यौं इक लेई कन्ह । दंग दावा नल पिन्नौ ॥
ज्यां इकले हनुवंत । बंक लंका गढ ढाह्यौ ॥
ज्यौं इकलेई भीम । खित्त कौरव तन गाह्यौ ॥

८४ पाठान्तर–लोहांनौ । चिहु । कोद । ज्यों । तुल । मधि । भ्रमाइय । बलि । चिहु । धज । विधितुग । भयौ । चिहु । फेरईय । ज्यों । घेरिईय ॥

८५ पाठान्तर–षिभि । कुआंरैं । मथं । भईय । तथं । कैं । तरह । सिंचिय । चिंचीय । * यह सब अधिक पाठ हैं । भांम वहलह । कजल । प्रमांन । प्रबत ।

८६ पाठान्तर–प्रनाल ॥

ज्यौं पुनि अगस्ति अप इक्कयै। सोषि सब्ब सायर लयौ ॥
दांनव कि चंपि अंगद बलिय। नंषि उदधि परसौं गयौ ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ बल बंध्यौ नाहर नारिंद *। इंद्र जनु वज्र हथ्थ झलि ॥
मुकति सुफल लहीय। बीर ब्रह्मांड तार षुलि ॥
नर नाहर ज्यौं लस्यौ। लज्ज पंकह आलुझ्झौ ॥
सार धार निझार। पार मुक्किग जग सुझ्झौ ॥
कलहंत केलि परिहार रिन। चिसल तेज लग्गिय चिभुअ ॥
भग्गौ न भूमि रजपूत हौं। करौं नाम जिम अटल धुअ ॥
छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ सुनिय मंच सेवक्क प्रमांन *। रहट घही फेरहि हम ॥
पेट भरन * चल्लंन। पुट्ठि दै भार चलहि क्रम।
ते नह गनियै सूर। ध्रंम छिचिन कौ नांही ॥
स्वांमि संकरै छंडि। लोभ अप्पन घर जांही ॥
गनियै न सूर अरि जूह बल। अप्प सेन इषि घट्टियै ॥
जै अजै भाग भूपति क्रमह। अप्पु दोस अप मिट्टियै ॥
छं० ॥ १४८ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ वाय रूप प्रथिराज। गज्जि गयो असि रूकं ॥
सार धार उझ्झार। गुरज भंज्यौ सिरभूकं ॥
रह्यौ भान रथ षंचि। पवन रह्यौ गति छंडि थिर ॥
रहे देव टग चाहि। नचै बैताल बीर भर ॥

---

८७ पाठान्तर—* अधिक पाठ है। जिति। लीनौ। ज्यों। इकलेइ। इकलेइ। ज्यों। इकलेइ। हनवंत। हनुमंत। ज्यों। इकलै। सत्त इकलै। सब। दांनव। परसें ॥

८८ पाठान्तर—नाहर। * अधिक पाठ है। हथि। हथ। मुगति। ब्रहमंड। ज्यों। जल पंकह। निझार। मुक्किग हो। करौ। नांम ॥

८९ पाठान्तर—सिवक। * अधिक पाठ हैं। घठी। घटिका पुठि। चलि। कौं। स्वांमी। जांहीं। रवि। भुआति ॥

मंडे जु रास कित्ती प्रबल । सोइ मरन कुहेत दिन ॥
पल पंष रास पच्छै चढौ । नाहरराइ नरिंद रन ॥
छं० ॥ १४९ ॥ रू० ॥ ९० ॥

कवित्त ॥ नाहर राइ नरिंद । चित्त चिंता उत्तारिय ॥ १ ॥
मन बध्यौ बल घट्यौ । मरम केवल विचारिय ॥
सुनहूँ तौ * कहूं कवित्त । सुथिर जीवन जग नांही ॥
इह संसार असार । सार कित्ती कलु मांही ॥
ज्यौं उरगह मुष उंदर परै । यौं सुदेह नाहर कहै ॥
भवतव्य बात मिट्टै नहीं । नाम एक जुग जुग रहै ॥
छं० ॥ १५० ॥ रू० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ इह कहि रचि रन मंड छपि । ज्यौं कपि रष्षस सैंन ॥
कोपि कन्ह धायौ बली । ज्यौं अगि विकुटिय गैंन ॥
छं० ॥ १५१ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ॥

विराज ॥ धप्यौ कन्ह थहीं॥कुटी अंषि पहीं॥ अरी सेन फहीं। मनौं दूध षहीं॥छं०॥१५२॥
षगंगे उहहीं। मनौं कठ्ठ कहीं। परे भूमि लहीं। मनौं मद्द जहीं॥ छं०॥ १५३॥
बहैं षग्ग घहीं। मनौं चक्क महीं॥ तरफ्फैं कि तहीं। मनौं लागि नहीं॥छं०॥१५४॥
लरैं यौं सुभहीं। मनौं लोंन अहीं। सुरें मारि झहीं। मनौं लत्त तहीं॥छं०॥१५५॥
पसू पंष ठहीं। पलं स्रोन चहीं। कवीचंद भहीं। सुषं कित्ति रहीं॥
छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ९३ ॥

९० पाठान्तर—प्रथीराज । गज्जि । उभार । भांन । गवनु । मंडै । यु । रासि । कित्ति । सोई । पछैं । नाहरराव ॥

९१ पाठान्तर—नाहरराय । चिंत । चिंता । उतारीय । केवलह । विचारीय । सुनहु । सुन हूं । * अधिक पाठ है । नांहीं । ज्यों । उरगह सुमुष । यों । सुमिटै ।

९२ पाठान्तर—छन । ज्यों । रषस् । कन्ह । ज्यों । विकुट्टिय ॥

९३ पाठान्तर—* सं० १६४० की प्रति में छुद्द नाम विराज है और इतर में छंद रसावला है ॥ १५२ ॥ मनों । कठ । परें । मनों । मनो । मद्द ॥ १५३ ॥ बहै । मनों । तरफें । लाग ॥ १५४ ॥ लरें । यों । मनों । लोंन । मनों । लत ॥ १५५ ॥ पसूं । थट्टी । कवि ॥ १५६ ॥

कवित्त ॥ नाहर नाहर राव । कहर नाहर सुकन्ह कर ॥
दिठ्ठ दिठ्ठ अंकुरिय । भरिय विस जांनु विषहर ॥
हमसि कन्ह असिरीस । सीस चुकि परिय बांम भुज ॥
पुनि उक्कुटि परिहार । सार सिर कन्ह टोप भुज ॥
लग्गे सुटोप उड्डिय किरच । बहत धार उत मंग बचि ॥
जैजया सद्द जुग्गिन करहि । दुअन जुद्ध अदभूत मचि ॥
छं० ॥ १५७ ॥ रू० ॥ ९४ ॥

डारि कंन्ह तरवारि । कढ्ढि जम दढ्ढ मिल्यौ हिय ॥
मचि जुद्ध हूत बीच । धप्प भत्तीज द्रिष्षि निय ॥
गहि सुसिष्ष पुठि आइ । घाइ जम दढ्ढ कियौ तिय ॥
छंडि प्रान परिहार । परे पाल्हन ऊपर जिय ॥
गहि रोस नंषि नर भूमि पर । हनि अनियारिय उभय कसि ॥
तिन हनत घाय घुंमत झुमत । गयौ निठ्ठि नाहर निकसि ॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ ९५ ॥

नर नाहर जिम लथ्थौ । गयौ नाहर जिम नाहर ॥
घाव घट्ट घन घुंमि । झुंमि निकसिय बल नाहर ॥
कन्ह कंक किय नन्ह । बंक भर भूमि पछारिय ॥
जनु कि लँगूरह लंक । तोरि बारा धर डारिय ॥
सादान बज्जि रन रज्जि सह । तह सु सथ्थरकत करिय ॥
सोमेस सूर चहुआंन सुअ । कित्ति चंद छंदह धरिय ॥
छं० ॥ १५९ ॥ रू० ॥ ९६ ॥

९४ पाठान्तर-कन्ह । दिठ दिठ । जांनि । परीय । बांम । फुनि । उछटि । उक्कुटि । कन्ह । उड्डिय । सबद । जुगिन ॥

९५ पाठान्तर-कन्ह । जमदढ । मचि । जुध । बीचि । धपि । भतीज । द्रिषिनीय । सिषि । पुठ्ठि । जमदढ । प्रांन । पल्हन । उपर । अनियारीय । निठि ।

९६ पाठान्तर-घट । घूमि । झूमि । नन्ह । झूंमि । लंगूरह । डारीय । सदांन । बजि । रजि । सथ । करीय । चहुआंन । चहुवांन । सुय । छंदहि ॥

वल घंट्यौ सव सथ्थ । जुद्ध धायौ तत्तारिय ॥
चाहुआंन कौ साथ । तेग तुंगह विडुारिय ॥
उंच गात अरु हथ्थ । वीर कढ़ी पट भारिय ॥
इह ओपम कविचंद । चिंति मन मझ्झ विचारिय ॥
पल्लव सुवीर कैतुकि नवल । वरवसंत वायह चलै ॥
तम तेज रुधिर भींज्यौ वहुल । कलह किप्ति जावक पुलै ॥
छं० ॥ १९० ॥ रू० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ नाहर नाहर जिम निकसि । भिरि नाहर के भेष ॥
कहर कन्ह धपि कुप्पि पुठि । बली मीर चष लेष ॥
छं० ॥ १९१ ॥ रू० ॥ ९८ ॥

कुंडलिया ॥ फिरि जुहार किय स्वामि कौं । मुक्किय काम धमारि ॥
बली मीर गढ्ढौ लयौ । मरन सरन विचारि ॥
मरन सरन विचारि । मिलन अंतहपुर किन्नौ ॥
बँधि चिय सांइ सुचित्त । करि सांई सौं दिन्नौ ॥
सार धार तन षंड । षंडि मार्‍यौ रिपु जुर जुरि ॥
तिल तिल तन तुट्टयौ । रंभ ढुंढ्यौ चित फिरि फिरि ॥
छं० ॥ १९२ ॥ रू० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ सिर तुट्टै परि भूमि पर । यौं राजै कविचंद ॥
कमल जानि नचंत सर । सरद चंद पर कंध ॥
छं० ॥ १९३ ॥ रू० ॥ १०० ॥

कुंडलिया ॥ कमल जानि नंच्यौ जु सर । दिसि सोभै संग्राम ॥
मानहु जलद कमोद तजि । थल जए ए ताम ॥

९७ पाठान्तर-सथ । तत्तारीय । चाहुवान । विहारीय । हाथ । कढ्ढी । भारीय । उपम । मन सों । विचारीय । विच्चारिय । वायह । भज्यौ ॥

९८ पाठान्तर-नाहर के । लेवि ॥

९९ पाठान्तर-स्वामि कों । मुंकिय । कांम । गढ़ो । शरन । विचारि । अन्तरपुर । बंधि । चीय । सांई । सुचित । सुभृत । तिल तिल्ल । ठंढ्यो ॥

१०० पाठान्तर-तुट्टे । यों । राजि । राजे । जांनि । नाचंत । शरद कंध ॥

थल जए ए ताम। चंद ओपम तहां पाई॥
मांनहु वीर समुद्र। दूयौ फल हथ्थ बधाई॥
धार धार चढि सूर। सूर कीरति किमलं॥
धन्नि धन्नि उच्चार। सीस नच्चौ सुकमलं॥
छं०॥ १६४॥ छ०॥ १०१॥

नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना॥

कवित्त॥ भग्गा नाहर राई। पाई मुक्कै नाहर जिम॥
जिम जिम भर कढ्ढई। रोस लग्गा बर तिम तिम॥
षेत सोधि चहुआनं। पर्यौ तूंवर पाहारी॥
बर* परर्यौ तहां गोइंद। पर्यौ भट्टी अधिकारी॥
षींचीं प्रसंग बंधव उभै। मोह सुबंधा बंध बर॥
तिम तिम सु तेग ताहन लसै। तिम तिम बुट्टे सार नर॥
छं०॥ १६५॥ छ०॥ १०२॥

चिविध सहस्स नाहर * बसंत। पच कायर तन भारिय॥
वीर रूप तप भान। नीर सूकै षल भारिय॥
तत्तारि तुंअर नरिंद। भयौ तह गहर पत्त छंह॥
छांह स्वांमि संम्रह। जूह टारिय सुअंग तहँ॥
फल फूल किति पंषी वरन। विमुष न भौ संमुह लर्यौ॥
गंधर्व वीर चालुक वरन। मरन वीर अच्छरि बर्यौ॥
छं०॥ १६६॥ छ०॥ १०३॥

---

१०१ पाठान्तर—जांनि। जानैं। नच्चौ। सुर। मानहु। थल ए उए तांम। ऊपम। पाइय। मानहु। हथ। बधाइय। किए ति ‹ किए सु। धनि २। उचार। नंच्यौ॥

१०२ पाठान्तर—नाहरराय। पाय। मुक्या। कढई। रीस। चहुवान। चाहुआंन। तूवर। तूअर। पहारी। परहारी। * अधिक पाठ है। तथा उलट पुलट पाठ ऐसा है—भर गोइंद तहां पर्यौ। बध्या बंधवर। तेज॥

१०३ पाठान्तर—सस्त्र। * अधिक पाठ है। भारीय। भांन। सुक्कैं। भारीय। तत्तार। तूंअर। तोंअर। प्रत्त छह। पत्त छंह। छाह। स्वांमि। टारीय। तहां। भैं। गंधर्व्व वीर चारन वरन। अच्छरि॥

गुज्जरं वै परधान। जैन धम्मी मत लद्धी ॥
एकादस चहुआन। धर धारह आलुद्धी ॥
सहस एक असवार। धार है गै घट संद्यौ ॥
नाहर राइ नरिंद। कोट पट्टन वै चढ्यौ ॥
ढुंढयौ षेत चहुआन बर। अरु भारथ आहुट्टयौ ॥
चामर सु छच धरि षेत में। सुधा विविध विधि लुट्टयौ ॥
छं० ॥ १९७ ॥ रू० ॥ १०४ ॥

डोला पंच पचीस। स्वामी संजुत्त चढाइय ॥
घाइ कन्ह घट घुम्मि। घाइ एकादस राइय ॥
चंपि बीर चालुक्क। राज मेलान तुच्छ करि ॥
गल गज्जै सामंत। बरैं बरनी नाहर बरि ॥
रविवार बीर पंचमि दिवस। एकादस रविभुअन ग्रह ॥
अष्टम सु चक्र जोगिनि ग्रहन। बर बज्जेति नरिंद तह ॥
छं० ॥ १९८ ॥ रू० ॥ १०५ ॥

पट्टन में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक होना ॥

देव दुसमि कै दीह। नयर पट्टन चहुआनं ॥
गुर पंचम रवि नवम। सुबर ग्यारह ससि थानं ॥
तीय थान बर भौम। सुक्र सत्तम बल किन्नौ ॥
केइंद्री बर बुद्ध। राह सब कौंद अच्छिन्नौ ॥
आनंद चदं बरदाइ घन। राजभिषेकन पट्टि करि ॥
साजंत भूमि जीते सुपति। तेज तुंग दुज्जन सुहरि ॥
छं० ॥ १९९ ॥ रू० ॥ १०६ ॥

---

१०४ पाठान्तर–गुजर। परधांन। धृंम्मी। धृमी। चहुआंन। अलुद्धी। नाहरराय। चढ्यौ। चहुआंन। आहुटयौ। लुटयौ ॥

१०५ पाठान्तर–डोंला। स्वांम्री। स्वांमि। धाय। घूंमि। घुंम्मि। धाय। ईकादस। मेलांन। तुछ। बरें। बरी। बजेति ॥

१०६ पाठान्तर–चहुवांनं। चहुआंनं। थांन। कीनौ। कैंद्री। सबकोद अहिनौ। बरदय घनं। पट। दुजन ॥

दूहा ॥ तिरिय वक्र अधचक्र नन। ऊरध वक्र प्रमान ॥
इन नक्षिच चहुआंन की। पट अभिषेक समान ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ इन नक्षिच कविचंद। कौंन कारन जपावै ॥
पटभिषेक राजान। बहुत आराम प्रभावै ॥
ग्रह प्रसाद * तोरन उतंग। कच जंचह सक टावै ॥
धजा बंधि पत्ताक। संष चामर मंडावै ॥
उदयन्न परब पानिं ग्रहन। बहु बिबेक ध्रंमह सुधरि ॥
नन कूप तडागन वापियन। धन सुक्रियन सुक्रियन्न वरि ॥
छं० ॥ १७१ ॥ रू० ॥ १०८ ॥

नाहरराय का हारकर अपनी कन्या के विवाह का लग्न लिखवाकर भेजना ॥

छंद पद्धरि ॥ सब सथ्य तथ्य हुअ एक ठांम। मुक्कांम कीन गिरिनार गांम ॥
सब लोक महाजन मिले आइ। चिंत्यौ सुचित्त नाहर सुभाइ॥छं०॥१७२॥
जिहि मेल होइ सो करि उपाइ। दिष्षियै दीप सो नहीं लाइ ॥
पहुमी सुकाज भर तजत प्रान। पहुमीस काज धन देत दान॥छं०॥१७३॥
पहुमीय काज जग बाजि देत। उपाइ नेक पहुमी सुलेत ॥
पुत्री सुएक तिन तन कुआरि। दीसंत देह जनु मदनधारि॥ छं० ॥ १७४ ॥
बुल्लाइ विप्र लिषि लगन तथ्य। पठ्ठाइ दीन न्रप पिथ्थ जथ्थ ॥
आनंद राज सब सेन अंग। फुल्ले कि कमल जनु दिषि पतंग ॥
छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

१०७ पाठान्तर–तिरीय। प्रमांन। चहुआंन कीं। पटभिषेक। समांन ॥

१०८ पाठान्तर–कौन। उपावे। पाट विभेक राजांन। पाटभिषेक राजांन। आरांम। * अधिक पाठ है॥ उतंग। पताक। उदय। उदयत। पांनिं। पांनि। ध्रंम्मह। तटाकन। धन सुक्रियन सुक्रियन वरि। सुक्रियन चुक्रियन वर॥

१०९ पाठान्तर–सब्ब। सथ। तथ। हूव। ठांम। गिरनारि। गांम। सब्ब। मिलिय। आय। चित्यौं। सुभाय॥ १७२॥ जिंहिं। होय। उपाय। दिखिये। नहीं। लाय। पुहमी। प्रांन। दांन॥ १७३॥ उपाय। कुवार। धार॥ १७४॥ बुलाय। तच्छ। पठाइ। पिथ। जंथ। फूले॥१७५॥

पृथ्वीराज का व्याहने को जाना ॥

कवित्त ॥ नट्ठा नाहरराइ । षेत ढुंढौ चहुआनं ॥
राज जीति गज लभ्भि । सीस लग्गा असमानं ॥
तुम मल्हन्न परिहार । मत्त कीनौ अमित्त जुध ॥
बरन बीर संमुहौ । राज लग्गे सुमंत सुध ॥
पंचमी वार रवि रात द्दिन । गंज नाम बर जोग गुर ॥
गिरि नाम करन राजन्न बर । चढ्यौ बीर बीरंस डर ॥
छं० ॥ १७६ ॥ रू० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का तोरन की बंदना करना ॥

कवित्त ॥ बंदि राज तोरन्न सुचंग * । मुत्ति नष्यैं अच्छित अलि ॥
मनौं * चंद किरनि कूटंत । भान नष्यै मयूष छलि ॥
ठाम ठाम चिय गान । जानि अच्छरि कैलासह ॥
सुभ सिंगार सोभंत । भूमि रहि अलि रस बासह ॥
तोरन सुचारु आचार करि । कै जनवासत मंडपहि ॥
दिष्षंत नयन भुल्लहि चषित । का कवि बन्नहि भाव कहि ॥
छं० ॥ १७७ ॥ रू० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का नाहरराय की कन्या से विवाह होना ॥

दूहा ॥ करि आचार सब पंडित । पानि ग्रहन फुनि व्याह ॥
सोम बास बसुनाइकै । धनि नाहर कत्याह ॥
छं० ॥ १७८ ॥ रू० ॥ ११२ ॥

---

११० पाठान्तर–नठा । नाहरराय । ढूंढ्यौ । चहुआंनं । लभि । मलह । मल्लह । मत । अमित । जुद्ध । लगा । राति । नाम । गिर । नांम । बरन । चढो । बीरंसु ॥

१११ पाठान्तर–तोरन । * अधिक पाठ है । मुति । नषैं । कुट्टंत । नंषै । ठांम ठांम । चीय । गांन । गांम ॥

११२ पाठान्तर–पंडितन । पांनि । फुनि । सोवामध सुनायकैं । सोवास बसुनाइकै । धंनि । कत्याह ॥

नाहरराय का कहना कि आपके काम में सीस देने के सिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं हैं॥

दूहा॥ नाहर राइ नरिंद कहि। का तुम जोग जगीस।
और देन हम हैं कहा। काम सीस हम ईस॥
छं०॥ १७९॥ रू०॥ ११३॥

नाहरराय की कन्या का गुण और रूप वर्णन।

साटक॥ तन्मै स्याम सुरंग वाम तनयं, मन्मथ्य वल्ली कला।
सुष्षं धामय तेज दीपक कला, तारुन्य लच्छी ग्रहा॥
रूपं रंजित मंजु माल कलया, वासंत पद्मावली।
अव्वं लक्छन काम धीरज गुणै, धन्यौ दुती दंपती॥
छं०॥ १८०॥ रू०॥ ११४॥

पृथ्वीराज का जीत कर स्त्री के साथ लौटना॥

कवित्त॥ संभरि वैरन जीत। बीर चालुक्क काम बल॥
उभै जोध सो जितै। लेइ कर वत्त कासि कल॥
बीर निसानति भग्ग। बग्गि आनन्द निसानं॥
प्रात होत बर बीर। चल्यौ संभरि दिसि थानं॥
भर विब्भर स्वग मग हय गइय। रहिय तिम्मगत जुद्ध दुक्क॥
कालंक कोटि भंजै विषल। सुबर बीर वीरह जु पुक्क॥
छं०॥ १८१॥ रू०॥ ११५॥

अरिल्ल॥ लै तरुनी डोला चढि राजं। डोला लंगरिराइ बिराजं॥
धन रंगा तोर त्तिय धन्यं। जिन रष्यौ जीवत न्टप मन्यं॥
छं०॥ १८२॥ रू०॥ ११६॥

---

११३ पाठान्तर-नाहरराव। नाहरराय। कहा। देन। ओर। दैंन। है। कांम॥

११४ पाठान्तर-तन्मे। स्यांम। वांम। मनमथ। वाली। सुषं। लछो। ग्रहा। पद्मावली। अवं। लछन। कांम। गुने॥

११५ पाठान्तर-रिन। जोत। करवत। कालिकल। निसांन। बग्गि। निसानं। थानं। विभर। अगमगह। गइय। तिम। भंजे। पुछ॥

११६ पाठान्तर-लंगरीराय। धनि लंगा तोर तीय धंन्यं। जीवित। मंन्यं॥

संग बरनि डोला चढ़ि राजं । मनौं रत्ति दुति काम समाजं ॥
के अलि डोलनि रुथ्थ सुसाजं । चढ़ि सब रुथ्थ बजावत बाजं ॥
छं० ॥ १८३ ॥ रू० ॥ ११७ ॥

पृथ्वीराज का ग्यारह डोलों सहित होना ॥

गाहा ॥ करी ऊर्ज्जत सरीरं । भीरं भंजि स्वामि का मेवं ॥
ग्यारह डोल सुसथ्थं । कथं पत्तेव संभरि ग्रेहं ॥
छं० ॥ १८४ ॥ रू० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का विवाह कर घर पहुँचना ॥

दूहा । ग्रह पत्तौ जित्तौ सथन । परनि सुचंगी बाल ॥
जंभा वीतं विभ्रमयौ । कुँअरप्पन सुहि लाल ॥
छं० ॥ १८५ ॥ रू० ॥ ११९ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ बंस अनल चहुआंन । भयौ न पिथ सम कोई ॥
जिग षंडे षल षग्ग । दीन बंदै सब लोई ॥
जिन नाहर राइ नरिंद । पंडवं सह पज्जारिय ॥
जिन वंभनवा सौं सिंघ । बान ढठ्यौ गंजाइय ॥
अरि घरन घरनि घर चैनं नहि । सयन निसंकन संचरहि ॥
बन गहन बहन विह्वल फिरहि । ग्रंदर ज्यौं कंदर बसहि ॥
छं० ॥ १८६ ॥ रू० ॥ १२० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके नाहरराइ
कथा वर्णनं नाम सप्तमो प्रस्तावः ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

११७ पाठान्तर-बरनि । मनों । रत्ति । डोलन । सुथ ॥
११८ पाठान्तर-करि । भजि । सुसथं । संभरी ॥
११९ पाठान्तर-ग्रह । विभ्रमयो ॥
१२० पाठान्तर-चहुवांन । भय । पिथह । नाहरराय । नाहरराव । पंजारीय । सौं । वांन । ठट्टो । ठठो । चैंन नह । ज्यैं ॥

अथ मेवाती मुगल कथा लिख्यते ॥

(आठवां समय ।)

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट को सरदारों में बांट कर प्रबल प्रातप के साथ राज्य करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सुवसि देस सोमेस । पेस मैवास मद्दीपन ॥
सुभट थट्ट संघट्ट । दिट्ठि कुँवरं किय जीपन ॥
मंडोवर परिहार । मारि उज्जारि जेर किय ॥
सामतंन सम रंग । लच्छि लभ्भी सुबंटि दिय ॥
दिन दसा देस दरबार दुति । दान षग्ग रत्तौ रचै ॥
पहु प्रबल पारि पच्छारि करि । अदट दह अगहनि गचै ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ भरिह दंड बल संड । गर्भ गर्भन डर छंडहि ॥
सगपन इक षग चास । षलक सेवा सिर मंडहि ॥
दुजनि देव गुर गाइ । पाइ पुज्जियहि निरंतर ॥
पंडित गुनी गुनग्य । द्रव्य लै चलहि दिसंतर ॥
दरबार भीर सुभटन थटन । कला कलित नाटिक नटहि ॥
छत्तीस राग रागनि रसनि । तंत ताठं कंठन ठटहि ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

---

१ पाठान्तर-सुभट्ट । दिट्ठ । कुअरं । कुंवरं । जिप्पन । उजारि । लच्छि । लभि । लभी । लीय । दांन । पछारी । हन ॥

२ पाठान्तर-छंडह । दुजन । गारै । गाय । पाय । पुजहि । पुजियहि । रागन । रसन । तंत ताठ ॥

सोमेश्वर का मेवात के राजा मुगल (मुद्गलराय) के पास कर लेने के लिये दूत भेजना ॥

कवित्त ॥ एक सुदिन सोमेस। दूत हज्जूर बुलाइय ॥
मैवाति मुगल नरिंद। पच पट्ठाइ लिष्षिदिय ॥
भूमि आस जौ करहि। भरहि तौ डंड सेव करि ॥
नतर समर डर डरपि। समुद उत्तरहि पार तरि ॥
सिर धारि हुकुम चर चलिय तहँ। जहां मुगल मंडल मही ॥
सोमेस सूर प्रथिराज कल। तिम संमुह चर बर कही ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

राजा मुद्गल का यह पत्र पाकर क्रोध प्रगट करके दूत को लौटा देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध करना और उस पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना ॥

छंद पद्धरी ॥ पढ़ि पच पिष्षि मुग्गल नरिंद। प्रज्जरिंग रोस मैवात इंद ॥
बहु दिवस सोमं न्रप हुअ सुषंग। किम उक्कवत्त कढ्ढी सुषंग ॥ छं० ॥ ४ ॥
किम सलिल उंट मुष चढै नीर। किम पवन गवन गति धरै धीर ॥
किम सूर सीत गुन गहै अंग। किम धर्मराज धरै दया अंग ॥ छं० ॥ ५ ॥
किम तजै व्याल बल विषम मुष्प। किम तजै जटी गल गरल दुष्प ॥
किम तजै उदधि उर अगनि दाह। किम तजै चंद रवि राह ग्राह॥ छं० ॥ ६ ॥
धरि नाम छचि क्यौं दंड देइ। इह बत्त मुष्ष क्यौं [illegible]राज लेइ ॥
अरु करन सेव कहि चाहुआन। मन मभ्भक्त हैास मति राज आन ॥ छं० ॥
सेश्रातु मोहि श्रीनाथ पाइ। तिहि चरन चित्त लग्गयौ सदाइ ॥
भंडार दंड मो सस्त्र पान। जब तब सुलेहु हाजुर निदान ॥ छं० ॥ ८ ॥
सिर पाव मंगि बुल्लिक प्रबीन। पहिराइ चरन बर बिदा दीन ॥
फिरि दूत पच्छ अजमेर आइ। दिय पच लग्गि सोमेस पाइ ॥ छं० ॥ ९ ॥
बंचिय सुलेष काइथ प्रमान *। सुनि सोम राज चहुआन भान ॥

३ पाठान्तर-हजूर। मैवाती। नरिंद। पठाय। लिपि। भूमियास। उतरहि। हुकम। तहां। तह ॥

* प्रमान=प्रमानराय नामक कायथ सोमेसराज की पेशी का मुंशी था ॥

करतार थंप्य षग दान दोइ। धन मह गर्व जिन करौ कोइ ॥ छं० ॥ १० ॥
अनसंक कंक षम बंक धीर। तिचि दान दंड मो जुद्ध अीर ॥
प्रज्जरिग सोम सुनि श्रवन दूत। जिचि ग्रेच पिथ्य अवतार भूत ॥ छं० ॥ ११ ॥
बुल्लाइ सूर सामंत राज। दुय घटी मुहूरत सधौ आज ॥
मेवात मच्ची ऊजारि जारि। पुर ग्रांम नैर दीजै प्रजारि ॥ छं० ॥ १२ ॥
षन षोदि बंक गढ ढाचि देहिं। इम करिय भूमि मैवात लेहिं ॥
कित्तीक मचिप मुंगल नरेस। बल बंधि संधि बिन करि अभेस ॥ छं० ॥ १३ ॥
पज्जून बोल्लि कूरंभ राव। पुंडीर चंद जनु अग्नि बाव ॥
दाचिम नरिंद कैमास संग। चामंड राव अरि दल अभंग ॥ छं० ॥ १४ ॥
गुज्जर कनंक बड़ राम देव। गचिलौत राब गोइंद सेव ॥
इतने सुभट्ट सजि जूच धार। बजि पंच सबद् बाजे करार ॥ छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ ४ ॥

ज्योतिषियों से मुहूर्त दिखाकर पुष्य नक्षत्र में चढ़ाई के लिये निकलना ॥

दूहा ॥ बोलिय जोतिग गनिक दुज। घरी मुहूरत सद्द ॥
तेरसि पुष्य रु भ्रगु दसा। चढि चल्ले निसि अद्द ॥ छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ ५ ॥

घर की रक्षा के लिये पृथ्वीराज को घर पर छोड़ा ॥

दूहा ॥ रत्तजु इच बिधि ग्रेच भय। सुनि सोमेस भुआल ॥
सिसु रष्षि रु संम्है चल्यौ। मुंगल दिसा विसाल ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

४ पाठान्तर-पिथ। मुंगल। नरिंद। प्रजरिग। प्रज्जरिंग। रोम। मेवात। सुषग। उछषत्त। कठी ॥ ४ ॥ सलित उलटी। शीत ॥ ५ ॥ व्यांल। मु:ष। मुंष। दु:ष। दुष ॥ ६ ॥ नांम। छित्री। मु:ष। चाहुआंन। चाहुवांन। मझ। होंस। होस। आंन ॥ ७ ॥ पाय। तिहिं। दंड मो भंडार बर सस्त्र पांनि। निदान ॥ ८ ॥ कुलिक्र परवीन। बहिराय। पछ। आय। दीय। लगि। पाय ॥ ९ ॥ कायथ प्रमांन। चहुवान। भांन। हय। दांन। दोय। मदहिं। कोय ॥ १० ॥ तिहिं दांन। प्रजरिग। जिहिं। गेह। पिथ ॥ ११ ॥ बोलाय। दुअ। महूरत। उजारि। यांम। नयर १२ ॥ षनि। करिअ। करिसु। मेवात। कितक्क। सुभूमि ॥ १३ ॥ पजूंन। जनुं। चावंडराव। ॥जर। रांमदेव। गोयंद। भट ॥ १५ ॥

५ पाठान्तर-बोलिय। धरी। पुरकस। भृगु दशा। चले। निशि ॥

६ पाठान्तर-रत्ति यु विधि इह येह भय। रषे संमुह। दिशा विशाल ॥

यात्रा के समय अच्छे शगुन मिलने ॥

दूहा ॥ प्रथम प्रयानह सुंदरी। मिली अंक लिय बाल ॥
पीतांमर अंबर धरै। दीप जोति रचि थाल ॥

छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ कलस कामीनी इक्क सिर। प्रात होत न्रप पिष्य ॥
मच्छ कंध काहार करि। पुर धुनि बाहम दूष्य ॥

छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ अन्य सगुन सुभ पिष्षि सब। गुंज गहर नीसान ॥
तमहर कर उज्जल अवनि। प्रगटे पुब्ब दिसान ॥

छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज को राज्य में छोड़कर सोमेश्वर का मेवात पर चढ़ाई करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा मुद्गलराय को दे कहना कि लड़ो वा दंड दे आधीन हो ॥

छंद भुजंगी ॥ चल्यौ चंपि सोमेस मैवात थानं। रष्यौ राज प्रिथराज ग्रेहं निधानं ॥
फटी फौज बैरीन की काल दिष्यी। तबै कग्गदं ग्रेहराजं विसष्यी ॥ छं॥ २१॥
बरं बीर धीरं महा बैर पुब्बं। मगै राज सोमेस सौं जुद्ध अब्बं ॥
महा तेज जाजुल्य भारी सुषग्गं। करै बैर सारथ्य पारथ्य जग्गं॥ छं० ॥ २२॥
इसो सूर सोमेस दीपौ मिलानं। दियं कग्गदं मुंगलं राजथानं ॥
करो सेव मेवं किमो अप्पि दंडं। तजौ आज पच्छै षगं पंडि छंडं ॥

छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ १० ॥

---

७ पाठान्तर—पयानह। प्रयांनह। लियें। पीतंमर ॥

८ पाठान्तर—एक शिर। पिषि। मछ। वामस ॥

९ पाठान्तर—सुमुन सब। निसांन। उजल। प्रगटी। दिसांन ॥

१० पाठान्तर—म्रेवात। प्रिथिराज। प्रिथिराज। गेहं। निधानं। दीषी। तबें। विसषी ॥ २१ ॥ मगें। युद्ध। अंव्वं। भारी सुजाजुल्य षग्गं। सारथ पारथ ॥ २२ ॥ इसो। मेलांनं। दीयो। पछे। छंडि ॥ २३ ॥

मुद्गलराय का पत्तोतर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज दोनो से लड़ाई मांगना ॥

साटक ॥ स्वस्ति श्री सउमेस राजन वरं। प्रिथ्राज राजं बरं ॥
तौ पत्तं सुन्हि श्रम्न कग्गद बरं। पल्यंज आकूलयं ॥
जाजा भंजन स्नेन साचस रने। प्रातं प्रतं जुद्धयं ॥
नां किज्जै तिन.ठाम षचिय बरं। छिम्या किमा कामनं ॥
छं० ॥ २४ ॥ रु० ॥ ११ ॥

सोमेश्वर का अपने लड़के के बध के विषय में संशय करना ॥

दूहा ॥ सिसु संसौ सन्हौ फिर्यौ। उभय काम बध बीर ॥
जौ मुक्कै चिय अधम क्रत। तौ दल सद्धि सरीर ॥
॥ छं० २५ ॥ रु० ॥ १२ ॥

और पृथिराज के पास मुद्गलराय के पत्र का संदेसा भेजना और उसका रोस में आकर पिता के पास रण में आ मिलना ॥

कवित्त ॥ छल भग्गा तिय पुच्छ। तात मुक्यौ संदेसं ॥
अरिन सयन संमुहौ। जुद्ध मंगन अंदेसं ॥
बाल कठिन कर ग्रह्यौ। भ्रंम रष्षन पित कागर ॥
जु कछु अग्ग संभवै। सोइ किज्जै सुमंत नर ॥
चढि बाल वियोगन कंत अप। सो निस रष्षै राज सिसु ॥
सामंच दोच भय प्रात बर। चढि चल्ल्यौ संग्राम किसु ॥
छं० ॥ २६ ॥ रु० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज। तात मुक्यौ संदेसं ॥
भयौ रोस जाजुल्य। तुल्य पावक्क सुभेसं ॥

---

११ पाठान्तर-स्वस्तश्री। सोमेस। प्रथीराज। प्रथिराज। तो। श्रवन। पलयंच। पलयंज। प्रात। प्रातं। नां। किज्जे। ठांम। षिच्चिय। छिमया ॥
१२ पाठान्तर-दोहरा। संसो। परयो। उभै। मुके ॥
१३ पाठान्तर-भगा। पुछ। पुछि। मुक्यो। संदेस। अरिय। सेनं। चंदेस। रषन। यु। आय। निशि। रष्यो। राजं। सामंत। राज बर। चढे। चल्यो। संग्राम ॥

कवन वत्त हुच तत्त । मत्त मंड्यौ अरि ग्रेहं
मच्चिम शुद्ध बिन मुद्ध । करे नच सेव सनेहं ॥
बुल्लाइ अप्प भर अप्प सँग । चढि चल्यौ निसि अथ्य मंच ॥
पत्तौ सुजाइ तिन ठाम तब । सुष्प सयन सोमेस सच ॥
छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ १४ ॥

पृथ्वीराज का पिता के पास पहुंच कर सब सेना के सोते हुए पाना और सोमेस का उससे न बोलना ॥

गाथा ॥ पत्तौ पहु ढिग तातं । दिष्यौ सोतथ्य सब्ब सेनायं ॥
न बुल्यौ सोमेसं । प्रथिराजं मिष्टयं बैनं ॥ छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १५ ॥

उसका पिता के। निद्रा में और शत्रु की सेना के। देख भाल कर उत्तापित होना ॥

अरिल्ल ॥ महा तेज तन जग्गिय बीरं । तात दिष्षि निद्रा घन अीरं ॥
पच्छिलोइ अरि सेन सँपत्तिय । ज्यौं अरियं घन बीज षिवत्तिय ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १६ ॥

और उस का शत्रु की सेना पर झपटना ॥

दूहा ॥ सयन छंडि पति सयन सैां । झपट्यौ इन उन मान ॥
लीनर तीतर देषि कै । झपट्यौ जानि सिचांन ॥ छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज और मुद्गलराय का युद्ध ॥

कवित्त ॥ जनु कि सिंघ बन गज्जि । झपटि करि. करनि जुथ्य पर ॥
जनु कि अंजनिय जात । पात दनु दिष्षि हथ्थवर ॥
जनु कि भीम भीमंडा । दंत दंतीय उक्कारन ॥

---

१४ पाठान्तर-सुन्या । पावक । करे । बुलाय । अप । आप संग । चल्यो । निशि । अथमह । पत्तो । ठांम सुष । सैंन । सोमेस जहां ॥

१५ पाठान्तर-सो सब्ब सच्छ सेनायं । तथ । सब । नह । बुल्यो । पृथीराजं ॥

१६ पाठान्तर-बीर । दिषि । निंद्रा घट भीरं । पछिलो । अरि । संपत्तिय संपत्तिय । षिवंत्तिय ॥

१७ पाठान्तर-सैंन छंडि पति सैंन सो । उनमांन । लीनर । जानि ।

जनु कि गरुड़ गज्ज गज्जि । बज्जि पंनग बहु पारन ॥
तिम सूर झपटि सोमेस सुअ । जनु अकास तारक तुटिय ॥
जम जोर रोर अरि उड्डवन । सार मार सचुन जुटिय ॥
छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ उत मुंगल मचि इंद । इंद देवन जनु पारस ॥
हर बल कर बल कोर । गोल मंडिय भर भारस ॥
गंहिर गुंग नीसांन । जांनु बद्दल गुर गज्जिय ॥
बरंन बरन बैरष्ष । इंद्र धनुषह सम रज्जिय ॥
हथ नारि धारि आतस अनँत । सोर रोर अंमर उडिय ॥
जानै कि बिरचि बारधि लहरि । मचि मजाद बूडन कुटिय ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १९ ॥

ऐसे पृथ्वीराज के अन्य सूर मुग़ल के योद्धाओं से लड़े ॥

गाहा ॥ इम रंजे रन रंगं ॥ सूरं नूरं अंगं अमितायं ॥
जनु * बिरचे मचिय महिंद्रं ॥ बज्जं पात घाव अंगायं ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ २० ॥

कन्ह का मेवात्तियों से युद्ध ॥

कवित्त ॥ उत्तमंग हर थौर । ठैार रष्षन मेवातिय ॥
सीस नाइ मुंगल नरिंद * । कहर कुप्पौ घन घातिय ॥
कूत सु कन्ह नरनाह । दाह दावानल जल्लिय ॥
चक्क बक्क धरि धक्क । जानि महना रंभ झल्लिय ॥
षव दंत मंत उरझे जनुकि । मेह बुंद सर कर कुटिय ॥
सरजाल हाल अनहद अवनि । तिमिर पसर रविकर मिटिय ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ २१ ॥

---

१८ पाठान्तर-कर । करिन । जुथ । अंजनी । दिषि । हथ धर । गजि । बजि । तिम सु सूर सोमेस सुअ । जुटिय । उड्डवन ॥
१९ पाठान्तर-मही । गहर । नीसांन । जांनु । रजिय । जांनै । मृयाद ॥
२० पाठान्तर-सूर । नूर । अंग । * अधिक पाठ है । महिद्रं ॥
२१ पाठान्तर-ठौर । ठोर । मेवातीय । नांइ । मुंगल । * अधिक पाठ है । घातीय । जलिय । जानि । रंभ । झलिय ॥

कैमास का पठान बाजीदखां से जुद्ध ॥

कवित्त ॥ वाम अंग पठान। विरचि बाजीद † सुपंनिय ॥
उन उप्पर कैमास। हुकम प्रथीराज सुदिंनिय ॥
सीस नांइ बल बाइ। लाइ लग्गिय घन रोउन ॥
तीर तुबक तरवारि। तच्छि निकरै उर ओरन ॥
अनचढ्ढ नद्द नीसान धुनि। लगी लाग मार्द्ध बजन ॥
रन तूर तूर तबलन चहक। गहक चक्क रज्जे रजन ॥
छं० ॥ ३५ ॥ रू० ॥ २२ ॥

कूरंभ से राम गूजर का युद्ध ॥

कवित्त ॥ दष्षिन दिसि कूरंभ। नांम नरेन निवद्दिय ॥
तिन पर गुज्जर राम। करन दस दूवस वद्दिय ॥
समर भमर परैं सूर। चंपि जल जांनि उक्कारिय ॥
लोह लहरि बुड़ि जाँहि। मुररि मरदांन मुक्कारिय ॥
अन भंग अंग तन तन तकहिं। हकहिं बकहिं बज्झहिं बज्जिय ॥
अनभुम भूत भिरैं भूत भुव। समर श्रोन सज्जिता चज्जिय ॥
छं० ॥ ३६ ॥ रू० ॥ २३ ॥

इतने में पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक जा पहुँचना और घोर युद्ध का होना ॥

छंद भुजंगी ॥ जयं जाय पत्तौ प्रथीराज जुद्धं। करी सब्ब सेना विरुद्धं विरुद्धं ॥

---

२२ पाठान्तर–बांम। पठांन। सुयं। नीय। प्रथीराज दनिय। नांइ। बाइं। लाइं। तबक। तरवार। निकसैं। उंरन। नीसांन। हक। रंजे ॥

† बाजीदखां नामक पठान मुद्गलराय का एक बड़ा लड़ाका सेनापति अर्थात् जनरल था और परदेशी सिपाही उसके विभाग में थे। यह वृत्त इस महाकाव्य में जो मुसलमानी भाषा के शब्द आते हैं उनके विषय की शंका मिटाने के लिये बड़ा उपयोगी है ॥

२३ पाठान्तर–दषिन। द्दिशि। नांम। नारि ननिवद्दिय। गुजर। रांम। दूवल। वढिय। परैं। परे। जांनि। लोहहरि। जांहि। मरदांन। मुक्कारीय। तकहिं। बकहि। हकहिं। भिरैं। भुय। भलिय ॥

बजे ताल कालं मद्दा मल्ल बीरं । दुहुं बांह सेना विरुडं सुधीरं ॥ छं० ॥३७॥
गही बाग गल्ली कढे लोह तत्ते । मनौं कारनं काम दुग्गा विरत्ते ॥
स्वयं सूर सूरं मही में पचारैं । लगैं लोह अंगं बकैं मार मारैं ॥ छं० ॥ ३८॥
उडै छिंछ स्त्रगं मनौं अग्गि ज्वाला । हलैं जानि पत्तं बसंतं तमाला ॥
झिनं केति षग्गं छिनंकेति ताजी । *भिलैं भूप भूपं महा वीर गाजी ॥ छं० ३९॥
छिनक्कैति षग्गं तुटैं सीस लल्लै । उठैं छिंछ इच्छं मनो दाह पल्लै ॥
लगैं गुर्ज सीसं इसे टोप टुहैं । मनो दंग दाहं लगैं बंस फुट्टैं ॥ छं० ॥४०॥
इसे मंच रुची लगे लाग षग्गे । प्रलै काल ष्यालं मनौं बीर जग्गे ॥
छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ २४ ॥

मुद्गलराय की फौज का तितर बितर होना और उसका पकड़ा जाना ॥

कवित्त ॥ कहुँ तिमत्त घर धुकत । लुकत कहुँ सुभट घात रूल ॥
टुकत काल कँहु पच । कुकत कहुं सेन पाइ जल ॥
रुकत समर भट भीर । धुकत धर मह क्क्क जनु ॥
सुकत कंठ श्रम समर । ढुकत कातर फौजन तनु ॥
इम* सोमेस राइ चहुंवान सुभ्र । अरि समुंद जल बल्लयौ ॥
चढ्ढिय जिहाज जस जड्डि षल । मुंगल्ल महि गहि कल्लयौ ॥
छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥ २५ ॥

कवि का सोमेश्वर की सेना और घोड़े हाथी आदि की यज्ञादि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ॥

दूहा ॥ चमकत सार सनाह पर, हय गय नरभर लग्गि ॥
मनौं हच्छ परि झिंगिनिय, करत केलि निसि जग्गि छं० ॥४३॥ रू० ॥२६॥

२४ पाठान्तर-दुहूं । बाह ॥ ३७ ॥ गढी । मनों । कांम । दुगा । महोमे । महोमैं । पचारै । लगै । बकै । मारै ॥ ३८ ॥ छिंछि । अगं । सगं । मनों । ज्वाल माला । सवंतंत माला । झनकेति । हिनंकेति । भिलै । * सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ॥ ३९ ॥ झिनकैति । तुटै । शीश । लल्ले । उठै । इछं । मनों । फल्ले । लगै । लगें । शीशं । टुटै । मनों । लगै । फुट्टै ॥ ४० ॥ मंत । षिची । मानों । वीर ॥

२५ पाठान्तर-कहुं । तमंत । तमंत्त । कहुं । कहु । थात्त । टुकत । कहुं । कहु । सेन । मद । ढुकत । तन । * अधिक पाठ है । राय । चहुवांन । चढिय । मूंगल्ल ॥

२६ पाठान्तर-निरि । झिंगनां । निशि ॥

कवित्त ॥ जग्गि सूर सोमेस। सेन सज्यौ हयगय नर ॥
राका निसि जनु उदधि। चढैं चकोर चंद पर ॥
सुन्यौ श्रवन दूह बैन। लरहि प्रथिराज षलनदल ॥
पुच्छ चांपि जनु सिंह। दिष्षि प्रजल्यौ नयन झल ॥
दइ बंब दुतिय जनु गगन रव। कुटि अंदुन गज गुरि चलिय ॥
दीसंत मत्त छक्कैं नयन। मनौं प्रबत पंषह हलिय ॥ छं० ॥ ४४ रू०॥२७॥

दूहा ॥ ठनक घंट घुघ्घर धमक, धमक धरनि बर पाइ ॥
झमकत सुंड लपेट भट, भरत देत गिर राइ ॥ छं० ॥ ४५ ॥ रू० ॥ २८ ॥

दूहा ॥ पग संगर जंजीर जरि, कज्जल गिरवर अंग ॥
दिग्घदंत बग घन बरन। झरत मदंग छदंग ॥
छं० ॥ ४६ ॥ रू० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ पब्बय कै पावस जलद, दल दारुन उठि कोर।
दिष्षावत दल बद्दलन, भर हर परत अघोर ॥
छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ दंति पंति कज्जल बरन, दिष्षि ढलंमल ढाल ॥
करहरंत बैरष लषी, दल सोमेस भुआल ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ उठी कोर हय गय प्रबल, दिठ्ठ दुअन कुटि षीर ॥
दिषि धनु धर हथनारि धरि, भरकि भरहरी भीर ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

छंद विराज* ॥ कियं चित्त पंगे। घटं घट्ट भंगे ॥
उनंगे सुषग्गे। मनौं बीर जग्गे ॥ छं० ॥ ५० ॥

---

२७ पाठान्तर–रन। चढै। सून्यो। बैनं। पृथीराज्ज। पुछ। दिषि। प्रज्जरै। दई। दइय। अंदून। छक्कै। छकैं। मनों। पंषकि ॥
२८ पाठान्तर–ठनक। घुघर। धमकि। पाय। राय ॥
२९ पाठान्तर–कज्जल। दिग्घ। दिघ। सदंग ॥
३० पाठान्तर–दिषावत। दिषावै। दल बल दूलन ॥
३१ पाठान्तर–दंत पंत। दिषि। ढल मल। वैरषलषी ॥
३२ पाठान्तर–हय दल। देषि धनुष हय नारि धरि। फरकि ॥
* इसी समय के रूपक २२ की टिप्पणी के साथ इस रूपक को भी ध्यान में लेना चाहिए ॥

रसं वीर लग्गे। बढैं अग्ग अग्गे ॥
डिगैं नाहि डिग्गे। मद्दा सोर भग्गे ॥ छं० ॥ ५१ ॥
परैंके अक्कग्गे। न वैरीन सग्गे ॥
तजै नाम षग्गे। ... ... छं० ॥ ५२ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

गाथा ॥ जग्गेयं जुध्र वानं। कुंभे यंनं कंकसं कायं ॥
दंतं मुष्य करेयं। वाहंतं वीर सुभटायं ॥ छं० ॥ ५३ रू० ॥ ३४ ॥

रण में मरे और घायल कैसे पड़े दीखते थे और कौन कौन योद्धा किस किस से घायल हुए और मारे गए ॥

कवित्त ॥ चय हिंसहिँ गज चिकरि। भगर सम दिषि कुलाचल ॥
बलि पंषिनि बेताल। नंदि नंदिय भोलाचल ॥
गिद्धि सिद्धि किलकंत। ईस मुंडावलि संधय ॥
चकि कँमंध पर टुट्टि। चढी देवी दल मंधय ॥
उपमान तास कवि चंद कहि। सुभत सनाह सुकालनिय ॥
जाने कि कृष्ण वृंदावनह। रास रमै निसि ग्वालिनिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ * जहँ बाजीद पठान। सघन षुरसांन षांन तहँ।
हय कटि दुव तंडीर। उभय कम्मान तांनि सह ॥
उंच कहर कंधान। कोट गिरि दांन लंब भुत्र ॥
रकत कंन मुष चष्षु। कंक अनसंक अवनि धुत्र ॥

---

३३ पाठान्तर-इतर पुस्तकों में इस छंद का नाम रसावल वा रसावला लिखा है परन्तु हमारी सं० १६४० की पुस्तक में शुद्ध नाम विराज है वह हमने प्रयोग में लिया है क्योंकि यहां पर उसका ही लक्षण मिलता है अर्थात् वह दो लगुगु का होता है और रसावल दो गुलगु का होता है ॥ घट। मनें। बढ़े। आग्गें। अग्गे। अग डिगें। नांहि। सोर बग्गे। फरंके अक्कगे। सगे। तजे। नांम ॥

३४ पाठान्तर-कुंभेयन कंकलं काइँ। दंदं मुष। सुभटाइं ॥

३५ पाठान्तर-हिंसहिं। हिंसहि। दिषि। पंषिन। गिद्ध। सिद्ध। संधिय। कंमंध। परि। तिहि उपमान। उपमांन। निकि ग्वालिनीय ॥

भरि बांह कांन निलि लोह मुठि। दिष्षि षवासंति ओट करि ॥
ओडन समेत संनाह सम। सर सुविधि फुट्टिग निकरि ॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ धुकत धरनि षावास। कोपि कयमास काल्ह कर ॥
बज्र घात बलिबंड। हनिग तरवारि टोप पर ॥
टोप टुट्टि सिर फुट्टि। सम सुसंनाह चीर हुअ ॥
बष्षर पष्षर तुट्टि। तुट्टि हय षंड परिय जुअ ॥
जय जया सद्द आयास हुअ। सुमन सघन उप्पर झरिगं ॥
देष्षंत कहर करिबार बर। सेन सघन बिडुरि डरिग ॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

जहँत षेन धर धरन। तहँत बड गुज्जर रामह ॥
तहँ मुंगल रषन समर। संग घत्तिय सिर सामह ॥
तुरसबीध सिर टोप। फुट्टि पुप्परि रत बुट्टिय ॥
तहां उठिग इक बीर। जानि जमराँन सुरुट्ठिय ॥
तरवारि तेज नारेन हनि। धर असंध तुट्टिग धरह ॥
अनभूत दृष्ट अवसान बढि। करहि देव बंदन बरह ॥
छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ जहां मंगद मरदांन। कन्ह तहां जांनि नाग भुअ ॥
मिले तक्कि तरवार। झारि उभ्भारि सीस दुअ ॥
मेलिय मांगद सीस। टोप कढ्ढिय सिर धारिय ॥
नर नांचै कटि कढि। अद्ध अद्धं करि डारिय ॥

---

३६ पाठान्तर–जहां। बांजीद पठांन। तहं। तँहां। दुअ। चगु। भिरि। मिलि छोह। दिषि।

३७ पाठान्तर–केमास। बलिचंड। चुट्टि। बषर। पषर। त्रुट्टि। त्रुट्टि कैं षंड परिय लुअ। जै जया। हुय। दिष्षंत। बिंडुरि डरिग।

३८ पाठान्तर–जहांन। जहन। धरत। तहांत। तहत। गुजर। रांम। तहां। मुंगल। रष्पन। घत्तिय। सांमह। त्रिधि। सेर। बुट्टिय। उठग। ईक। जांनि। यमरांन। जमरांन। चुट्टिग। अवसांन ॥

धर गिरतं मंत माह मरद । हय षंधां अग्गिवर अरिय ।
जै जया सद्द सुरपुर भयौ । इम सुकन्ह वै धर परिय ॥
छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ कन्ह कटत वै धरनि । करनि जिन मित मारं मचि
बद्दै दुहथ तरवारि । छंक छवि लप्पटाइ तचि ॥
उड्डमहि हथ पग न्यार । सीस हक्करि धर धावहिं ॥
हंस हंस के मिलहि । माल अच्छरि के नावहिं ॥
अदभूत भयानक भगर सम । लगर लाग लग्गिय रनह ॥
हंकार हक्क कल कूह मचि । जयं सबद मच्चिय बनह ॥
छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ४० ॥

जयजयकार का उपमाओं के सहित वर्णन ॥

कवित्त ॥ मुषनि बज्जि हंकारि । नलब टंकार लाग लगि ॥
बजि भेरी भंकार । धार झंकार षाग षगि ॥
कुहि षीर संकार । लुहि भंडार धीर मुनि ॥
धुकहि धज्ज झंडार । झुकहि संडार मार धुनि ॥
अचरिज्ज अवनि अंमर चरनि । बरनि कवि कहा सब सकय ॥
संमरंग दुद्दल पिष्षिय सुभट । जकय केय कुक्कुय चकय ॥
छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ ४१ ॥

छंद तोटक* ॥ भमरावलि छंदय चंद कलं । पढि पिंगल अच्छिर जे विमलं ॥
बजई झनकार सुअस्सि घनं । षह तुंमर रिझ्झय नाद धुनं ॥
छं० ॥ ६१ ॥

३९ पाठान्तर-जहां । मरदांन । तहां नर नाह कंन्हक । कमकि बाहि षग झट्ट । झारि उभारि सीस दुअ । मेल्हिय । मंगद । शीश । धारीय । नर नांहे असि कट्टि । यट्टु अट्टुं करि डारीय । जरिय ॥

४० पाठान्तर-मार मचि । उडहि । हक्कहि । अछरि । भयांनक । लगिय । जय ॥

४१ पाठान्तर-बढि । धंज ॥

झननं कढ़ि षग्ग कला दुसरी। प्रगटे जनु विज्ज षहं पसरी॥
उपमा निसरी असि वैठि चयं। फिर नागनि नाग मनों षचयं॥
छं० ॥ ६२ ॥

जु करै दल दोड़य तीर मरं। बचचै जनु टिड्डिय सेन परं॥
दुतिई उपमा कवि यौं मनयी। किय अंगन चंद निसा जगयी॥
छं० ॥ ६३ ॥

जु चहुं चह चंबक बज्जि घनं। कि नचै उपमा अंग ईस जनं॥
जु फिरै गज गुंजत रोस चढं। षच बद्दल जानि किवाड़ बढं॥
छं० ॥ ६४ ॥

किसु रोपिय झुंडय सूर रनं। कि सुभै सुवसंत षजूरि जनं॥
जुबरै बरनो घन अच्छ वरं। झुलरै छिय चांपि विपिठ्ठ करं॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

जु बचै सिर उप्पर राम सरं। सु मनों अरिविंदन भौंर भरं॥
गज सीस सिरीन जु छिंक परी। कच अंगन बृंद वधू बिथुरी॥
छं० ६६ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

कुटि चक्क लगे गज कुंभ जिसे। मनु बद्दल पै सत चंद जिसे॥
दुअ हथ्थ गुरु जन सीस जरो। दधि भाजन ग्वालिन कोरि हरी॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

जु कियौ दल दोडन दुंद जुधं। मिलअंत सुइंषिन दिष्षि उधं॥
षिसयौ दल मुंगल मार मरं। बढिई प्रथिराज नरिंद कुरं॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

---

४२ पाठान्तर—* इस छंद का नाम इतर पुस्तकों में भमरावली लिखा है सो अशुद्ध है किन्तु वह तोटक वा त्रोटक नामक है—इनमें इतना ही अंतर है कि तोटक चार ललगु का होता है और भमरावली पांच का॥ अछिर। बजी। रिझिय ॥ ६१ ॥ फिरै। नागसि। मनों॥ ६२ ॥ तीरन मार। बहै। अपार॥ दुती उपमा कवि यों मन लग्गि। कि अंगन चंद निसा महि जग्गि ॥ ६३ ॥ अहं अंहं। चढंत। जांनि। बढंत॥ ६४ ॥ किं रोपिए। अछ ॥ ६५ ॥ उपर। मनो॥ ६६ ॥ मनों। हथ। गुरजन ॥ ६७ ॥ सुजुद्द। मिलंत। रंषिनि। दिष्षिय। उद्ध। षिस्यौ। मरोर। बढी। नरिंदह। कोर॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज की विजय ॥

दूहा ॥ भई जीत सोमेस सुत्र, लियौ मुगल गज मेलि ।
सोधि षेत सब द्दिघ लहु, बीर बरंनिय केलि ॥ छं० ॥ ६९ ॥ रू० ॥ ४३ ॥
रन सुद्धिय क्रुद्धिय तजिय, घाइल लीन उठाइ ॥
भये सूभट जे अंत तन, दाघ द्दिघ तन ताई ॥ छं० ॥ ७० ॥ रू० ४४ ॥
हुत्र डेरा नौबति बिहसि, पंच सबद दरबार ॥
जिंन भट लग्गे सस्त्र तन, तिन तन कीनिय सार ॥ छं० ॥ ७१ ॥ रू० ४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके मेवाती मुगल कथा नाम अष्टम प्रस्तावः ॥ ८ ॥

४३ पाठान्तर-जीति । दिघ ।
४४ पाठान्तर-दाघ दिघ ॥
४५ पाठान्तर-निहसि । कीनीय ॥

अथ हुसेन कथा लिख्यते ॥

(नवां समय)

संभरिनरेश (पृथ्वीराज) और ग़ज़नी के शाह (शाहबुद्दीन) से कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ॥

दूहा ॥ संभरि वै चहुआंन कै, अरु गज्जन वै साह ॥
कहौं आदि किम वैर हुअ, अति उतकंठ कथाह ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥*

शहाबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और उसकी वीरता की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ बंधव साहि सहाब । मीर हुस्सेन बान धर ॥
निज्ज बान सु प्रमान । बान नीसान बधै सुर ॥
गान तान सुज्जान । बाहु अज्जान बान बर ॥
श्रेव राज परवान । उच्च जस थान जुझ्झ भर ॥
उद्दार चित्त दातार अति । तेग एक बंदै विसब ॥
संकंत साहि साहाब तिन । तेज अजै जयमंत सब ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

---

१ पाठान्तर–चहुआंन । गजन । स्राहि ॥

* हमारे पास की सं० १६४७ वाली पुस्तक में इस प्रथम रूपक के नीचे तो इसमें लिखा दूसरा रूपक ही लिखा हुआ है परंतु उसके किनारे पर यह दोहा और लिखा हुआ है सो हम को क्षेपक दीखता है–दूहा ॥ आनंदिय गंधर्व तब, अहो सुनहि द्रिग जेन । अति दिथार कथन कथा, विबर कहौ बर बेन ॥

२ पाठान्तर–साहाब । हुस्सेनं । बान । निज्ज । बांन । प्रमांन । बांन नीसांन बंधे । गांन । तांन । तीन । सुज्जांन । सुज्ज़ांन । आज्जांन । बांन । परमांन । परवांन । उंच । थांन । जुझ्झ । उदार । संकंतं । अजे ॥

शहाबुद्दीन की पातुर चित्ररेषा की प्रशंसा, शहाबुद्दीन का उस पर प्रेम, मीर हुसैन का भी उस पर आसक्त होना और चित्ररेषा का भी मीर को चाहना ॥

कवित्त ॥ इष्षि बधु आचार। मीर उमराव जपि जस ॥
एक पात्र साहाब। चित्ररेषा सु नाम तस ॥
रूप रंग रति अंग। गान परमान विचष्यन ॥
बीन जान बाजान। आनि बत्तीसह लच्छन ॥
दस पंच बरष बाला सुबच। सुप्रसाद साहाब अति ॥
आसिक्क तास हुस्सेन हुअ। प्रीति परसप्पर प्रान गति ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना ॥

कवित्त ॥ एक सुदिन सुविहांन। साह हुस्सेन सुबुल्लिग ॥
वे काफ़र आतस्स उतंग। दह दिसि नह डुल्लिग ॥
पैसंगी पासंग। लष्ष लष्षां नलवाही ॥
सांईं सौं संग्राम। हक्कि हैवर गुरदाही ॥
गर्द्दन गुराव मच्छि मच्छि मषां। षांषवास अष्षिय घरह ॥
अन हल्ल नाल लभ्भय रवन। करौं तुच्छ तुभ्भी बरह ॥
छं० ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा देना कि या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं मारे जाओगे ॥

दूहा ॥ सुनिअ बैन साहाब तब। प्रीत न छंडी बाम ॥
कोपि कह्यौ सुरतांन तब। हनौ कि छंडौ ग्रांम ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

३ पाठान्तर-इषि। बंध। स नांम। अति अंग। गांन। परमान। विचछन। जांन। बाजांन। आनि। लछन। लतन। आसिक। हुसेन। प्रांन ॥

४ पाठान्तर-सदिन। हुसेन। आतस। उतंग। पासंगं। लष। लषां। सांई। सो। गद्द। अनहल। लभ्भेय। लभय। सुभीय ॥

५ पाठान्तर-सुनिग। छंड़िय। यांम। सुरतान। क। यांम ॥

मीर हुसैन का देश छोड़ कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त हुस्सेन। सेन अप्पन साधारिय ॥
छंडि नयर निस्संक। संक मन साह नसारिय ॥
निसा जाम इक आदि। लई सो पात्र परम गुन ॥
तहनि पुत्र परिवार। सज्जि सब साज सु अप्पन ॥
परिगह सु अप्प अग्गैं करिय। षांन षांन बंधी सिलह ॥
संचल्यौ नैर नागौर हुव। तजिय देस निज गंठ ग्रह ॥
छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

मीर हुसेन का पृथ्वीराज के यहां आना ॥

दूहा ॥ लै परिगह हुस्सेन गय। दिसि प्रथिराज नरिंद ॥
संभरि वै संभारि कैं। मनु आयौ ग्रहदंद ॥
छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

मीर हुसैन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना और मीर का आकर सलाम करना ॥

कवित्त ॥ पातिसाहि तहिन * नरिंद। साहि पीरोज प्रसन्नौ ॥
घर घर साहि घरंन। छित्ति नीसान दिवन्नौ ॥
पर पठान उंचीगु। मान अगिवान अगन्नौ ॥
तिन मैं रप्यौ साहि। आन गज्जन धर थन्नौ ॥
लभ्भै सुमीर जंमी जहर। दुनियां दिष लगि दुअन थां ॥
हुस्सेन मीर सल्लाम करि। गौ चहुआनह पास ग्रां ॥
छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

---

६ पाठान्तर—हुसेन। छंडिय। निसंक। सारीय। जांम। सादिल्लीय पात्र परम गुन। सथि। परगह। बंधिय ॥

७ पाठान्तर—हुसेन। प्रथीराजि। मनो ॥

८ पाठान्तर—पातसाहि। * अधिक पाठ है। नीसांन। पठांन। गुमांन। मांन। अंगानो। अगानो। मैं। रष्षे। थांनो। लभे। जु। दुनी। हुसेन सलांम ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलना और मीर हुसैन का सुन्दर दास को पृथ्वीराज के पास भेजना ॥

कवित्त ॥ पारधि पहु प्रथिराज। रमै षट्टू पुर पासह ॥
बष्पिल चीस चिचक्क। ससिष रेसम धर रासह।
सो कुरंग फंदेत। डोरि बहु बंधि बिनानिय ॥
जाम एक दिन आदि। मध्य षेलै मृगयानिय ॥
आयौ बसाचि हुस्सेन तहँ। सुन्यौ राज मृगया समय।
बुल्लाय दास सुंदर षिचिय। पठ्यौ प्रत्ति चहुआन तय ॥
छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

सुन्दर छाया का स्थान देख कर मीर का डेरा डालना ॥

दूहा ॥ उत्तम ठास सु छांह जल, करि मुकाम बलवीर ॥
षुल्लि डेरा बिधि बिधि बरन, तहां बयट्ठौ मीर ॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

हरम (स्त्रियों) का डेरा पीछे की ओर डाला।

दूहा ॥ डेरा हरम सुपिट्ठ रषि, चिहु पष्षां बर मीर ॥
पासबांन कुल सील सम, पात रष्षि बर नीर ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

सुन्दर दास का पृथ्वीराज के पास जाना, पृथ्वीराज का मीर का कुशल समाचार पूछना और उसका सब हाल कहना ॥

दूहा ॥ सुंदर दास सुपास गय, जहां राज प्रथिराज ॥
मिलिय बिबिधि पुच्छै कुसल, कहौ मीर सब साज ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

---

९ पाठान्तर-पारिधिरा। प्रथीराज। षटूपुर। तीस। फंद्दैत। विनानीय। जांम मधि हुसेन। तहां। बुलाय। सुंद्दरि। षिचीय। चहुआंनं। रय ॥
१० पाठान्तर-उतिम। ठांम। मुकांम। बर वीर। बयठौ ॥
११ पाठान्तर-पिठि। चिहुं। पषां। पासवांन। शील। रषि ॥
१२ पाठान्तर-यु पास। राजन। पूछै। पुछी ॥